# मध्यकालीन भारत का इतिहास

## इस्लाम का उदय

- इस्लाम अरबी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। ये हैं सल्म (शांति) एवं सिल्म (समर्पण)।
- इस्लाम धर्म का उदय अरब देश में हुआ।
- इस्लाम धर्म के उदय के पहले अरब में बहुदेववाद एवं मूर्तिपूजा का प्रचलन था।
- इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर मुहम्मद साहब थे।
- मूर्तिपूजा का विरोधी है।
- इस्लाम के अनुयायियों को मुसलमान कहा जाता है। इनका पवित्र ग्रंथ कुरान शरीफ है।

**मुसलमानों के 5 कर्तव्य**

1. **कलमा** : अल्लाह पर पूर्ण विश्वास प्रकट करना।
2. **नमाज** : प्रत्येक मुसलमान को दिन में 5 बार नमाज पढ़ना चाहिए।
3. **रोजा** : रमजान के महीने में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक अन्न-जल ग्रहण किये बिना अल्लाह की इबादत करना।
4. **जकात** : अपनी आय का 2.5% (ढाई) गरीबों में दान करना।
5. **हज** : प्रत्येक मुसलमान को जीवन में कम से कम एक बार मक्का की यात्रा करनी चाहिए।

- पैगम्बर मुहम्मद साहब प्रथम मुस्लिम राज्य की स्थापना की और मदीना को केन्द्र बनाकर मुसलमानों पर शासन किया।
- पैगम्बर साहब ने धर्मराज्य अर्थात् खिलाफत की स्थापना की।
- पैगम्बर साहब के बाद खिलाफत (धर्मराज्य) के प्रभुख को खलीफा कहा गया।

### पवित्र खलीफा

- पैगम्बर साहब के बाद चार पवित्र खलीफा हुए। ये चारों पैगम्बर साहब के साथी रह चुके थे तथा सर्वसम्मति से इन्हें खलीफा चुना गया अतः ये पवित्र खलीफा कहलाये।
- पवित्र खलीफाओं की राजधानी मदीना थी।

### 1. अबूबक्र - 632-634 ई.

- ये प्रथम खलीफा थे इन्होंने अल्लाह को केन्द्र में रखकर मुसलमानों पर शासन किया एवं इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार किया।

### 2. हजरत उमर-634-644 ई.

- इनके समय में विजय अभियान बहुत सफल रहे। इन्होंने ईरान, ईराक, मिस्र, सीरिया आदि क्षेत्रों को जीतकर खिलाफत में सम्मिलित किया।
- इन्हीं के समय में 636 ई. में अरबों का भारत पर पहला आक्रमण हुआ जो असफल रहा।

### 3. हजरत उस्मान- 644-656 ई.

- इनके समय में 651 ई. में पवित्र धर्मग्रंथ कुरान शरीफ का संकलन हुआ। यह ग्रंथ अरबी भाषा में संकलित है।

### 4. हजरत अली-656-661ई.

- इनके समय में भी विजय अभियान चलते रहे।

### 5. उमैय्या वंश 661-749 ई.

- 661 ई. में अली की मृत्यु के बाद मुर्वैय्या नामक व्यक्ति ने अली के पुत्र हसन को हटाकर स्वयं खलीफा बन गया।
- उमैय्या वंश की राजधानी दमिश्क थी।

## अब्बासी वंश - 749-1258 ई.

- 749 ई. में अब्बास सफ्फाह ने ईरानियों के सहयोग से उमैय्या वंश का अंत करके अब्बासी वंश की स्थापना की।
- अब्बासी वंश की राजधानी बगदाद थी।
- इस वंश का अंतिम खलीफा मुस्तकीम थे।

## अरबों की सिन्ध विजय

- 711 ई. में खलीफा वालिद के उत्तरी क्षेत्र (ईरान) के गवर्नर अल-हज्जाज ने खलीफा से सिंध अभियान की अनुमति प्राप्त कर ली।
- सर्वप्रथम 711 ई. में उबैदुल्ला के नेतृत्व में एक अभियान सिंध भेजा गया, किन्तु यह पराजित हुआ और मारा गया।
- दूसरा अभियान बुदेल के नेतृत्व में हुआ लेकिन यह भी असफल रहा।
- तीसरा अभियान 712 ई. मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में हुआ।
- मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध के शासक दाहिर को पराजित किया। दाहिर युद्ध करते हुए मारा गया।

### अरबों की सिंध विजय के कारण

अरबों के सिंध विजय के अनेकों कारण थे—

1. **राजनीतिक कारण-** मुस्लिम राज्य का विस्तार।
2. **आर्थिक कारण-**भारत समृद्ध देश था अतः यहां अधिकार करके धन प्राप्त करना।
3. **इस्लाम धर्म का प्रचार-**प्रसार करना
4. **तात्कालिक कारण-**कुछ अरबी जहाजों का समुद्री डाकुओं द्वारा लूटा जाना।

### अरबों की विजय का प्रभाव

1. **राजनीतिक प्रभाव-** अरबों की प्रशासनिक नीतियां मध्य युग के तुर्क, अफगान, मुगल साम्राज्य के लिए भी मार्ग दर्शन का कार्य करती रहीं।
2. **आर्थिक प्रभाव-** भारत में खजूर की बागवानी एवं ऊंट पालन का अधिक विकास।
   — चर्म शिल्प को प्रोत्साहन
   — मुद्रा प्रणाली का विकास
   — नगरीकरण अनेक नये नगरों का विकास हुआ।
3. **सामाजिक प्रभाव-** सामाजिक समानता का विकास हुआ। ऊंच-नीच, वर्ग-भेद में कमी। पर्दा प्रथा प्रारम्भ।
4. **सांस्कृतिक प्रभाव-** सिंधी भाषा का विकास हुआ। भारत में कुरान का सर्वप्रथम अनुवाद सिंधी भाषा में हुआ।
   — सैकड़ों अरबी विद्वान चिकित्सा, दर्शन, गणित आदि की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत आये।
   — अनेक भारतीय ग्रंथों का अरबी में अनुवाद हुआ, आयुर्वेद, सूर्यसिद्धांतिका, सुश्रुत संहिता, पंचतंत्र आदि का अरबी में अनुवाद हुआ।

## तुर्कों का उदय एवं भारत पर आक्रमण

- तुर्क मध्यएशिया की खानाबदोश जनजाति थी।
- अब्बासी खलीफाओं के समय ये लोग महल रक्षक और पेशेवर सैनिक के रूप में नियुक्त होने लगे।
- इसी समय ईरान, ईराक क्षेत्र में समानिद राज्य का उदय हुआ।
- आगे चलकर समानिद राज्य कमजोर हुआ। उसका लाभ उठाकर गजनी को केन्द्र बनाकर अलप्तगीन ने तुर्कों के प्रथम स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

## अलप्तगीन ( 962 - 977 ) ई.

- इसकी राजधानी गजनी थी।
- अलप्तगीन ने 1700 चुने हुए तुर्क अधिकारियों को नियुक्त किया। इनमें से एक सुबुक्तगीन था।
- अलप्तगीन के बाद सुबुक्तगीन शासक बना।

## सुबुक्तगीन ( 977-997 ई. )

- दूसरा तुर्क शासक सुबुक्तगीन था।
- कुछ दिनों बाद सुबुक्तगीन ने जयपाल के राज्य में आक्रमण करके लूटपाट किया।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद इसके दो पुत्रों—

  1. अब्दुल काशिम महमूद

  2. इस्माइल

  दोनों के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध हुआ जिसमें अब्दुल काशिम महमूद विजयी हुआ और अब्दुल काशिम महमूद गजनवी के नाम से शासक बना।

## महमूद गजनवी ( 998-1030 ई. )

- महमूद गजनवी गद्दी पर बैठने के एक वर्ष के अन्दर ही बगदाद के अब्बासी खलीफा अलकादिर बिल्लाह से गजनी के शासक के रूप में मान्यता प्राप्त कर ली।
- अल कादिर बिल्लाह ने महमूद गजनवी को अमीन-अल-मिल्लत (मुसलमानों का रक्षक) और यामिनउद्दौला (साम्राज्य का दाहिना हाथ) की उपाधि प्रदान की।
- महमूद गजनवी सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला पहला मुस्लिम शासक था।

### भारतीय अभियान

- महमूद गजनवी एक हजार ई. से 1027 ई. तक भारत में कुल 17 बार आक्रमण किया।
- इसका पहला अभियान 1000 ई. में हुआ जब इसने सीमा के कुछ क्षेत्रों को विजित किया।
- दूसरा अभियान 1001 में हुआ जब इसने हिन्दू शाही वंश के राजा जयपाल के विरुद्ध आक्रमण किया।
- जयपाल इस पराजय के अपमान को सहन नहीं कर सका और स्वयं निर्मित चिता में जलकर आत्महत्या कर ली।
- 1006 ई. में गजनवी ने मुल्तान पर आक्रमण किया और यहां पर करमाथी वंश के शासक अब्दुल फतेह दाउद ने बिना युद्ध किये ही आत्म समर्पण कर दिया। इस तरह मुल्तान पर महमूद गजनवी का अधिकार हुआ।
- 1008 ई. में पुनः इसने हिन्दू शाही राज्य पर आक्रमण किया और यहां के शासक आन्दपाल को वैहन्द के पास पराजित किया।
- इस विजय के बाद महमूद गजनवी ने सिन्ध पर अधिकार किया।
- 1018 ई. में इसने गंगा घाटी में प्रवेश किया और यहां पर गुर्जर प्रतिहार राजा राज्यपाल द्वारा शासित कन्नौज राज्य पर आक्रमण किया।
- महमूद गजनवी का सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण वा 1024-25 में सोमनाथ पर आक्रमण। इस समय गुजरात का शासक भीम प्रथम था। 3 दिनों के भीषण युद्ध के बाद इसने सोमनाथ के मंदिर पर अधिकार कर लिया और मंदिर को तोड़कर विपुल सम्पति प्राप्त की।
- 1025 ई. में सोमनाथ से वापस जाते समय सिन्धु नदी की निचली घाटी में जाटों ने इसका मार्ग अवरुद्ध किया। इस समय यह रक्षात्मक कार्यवाही करके गजनी चला गया।
- 1027 ई. में महमूद गजनवी का अन्तिम आक्रमण हुआ। यह आक्रमण जाटों के विरुद्ध एक तरह से दण्डात्मक अभियान था। इसमें इसने जाटों को कठोरता से दमन किया और वापस चला गया।

Pariksha Manthan

**महमूद गजनवी के प्रमुख भारतीय अभियान**

- महमूद गजनवी भारत में कुल 17 बार आक्रमण किये जिनमें महत्वपूर्ण हैं—

| वर्ष | राज्य/स्थान | राजा |
|---|---|---|
| 1. 1001-2 ई. में | हिन्दुशाही/राज्य | जयपाल |
| 2. 1005-6ई. में | मुल्तान | अब्दुल फतेह दाउद |
| 3. 1008-9 | हिन्दुशाही राज्य | आनंदपाल |
| 4. 1012-13 | थानेश्वर | राजाराम |
| 5. 1018-19 | कन्नौज | राज्यपाल |
| 6. 1020-21 | कालिंजर | विद्याधर |
| 7. 1024-25 | सोमनाथ | भीम प्रथम |

## महमूद गजनवी के आक्रमण का प्रभाव

1. भारतीय राजाओं को पराजित कर भारतीय राजनीति की कमजोरी को उजागर कर दिया।
2. पंजाब सिंध एवं मुल्तान में गजनवी गवर्नरों की नियुक्ति कर मुस्लिम शासन की स्थापना।
3. भारत में विदेशी आक्रमण का द्वार खोल दिया।
4. भारतीय कला को नष्ट किया।
5. भारत का धन गजनी ले गया।

## मुहम्मद गोरी

- 12वीं शताब्दी के मध्य में गोर वंश का उदय हुआ। इनके साम्राज्य का आधार उत्तर पश्चिम अफगानिस्तान था।
- प्रारम्भ में गोरी लोग गजनी के अधीन थे बाद में यह स्वतंत्र हो गये।
- 1163 ई. में गयासुद्दीन बिन साम गौर वंश का शासक बना इसने गजनी पर आक्रमण करके इसे विजित कर लिया और अपने छोटे भाई मुहम्मद गोरी को गजनी दे दिया।
- मुहम्मद गोरी का पहला आक्रमण 1175 ई. मुल्तान पर हुआ यहां इसने करमाथियों को पराजित कर अपना अधिकार स्थापित किया। यह इसकी पहली विजय थी।
- 1178 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया इस समय यहां का शासक भीम द्वितीय था।
- कशहद के मैदान में गोरी की करारी हार हुयी। यह भारत में इसकी पहली पराजय थी इस पराजय के बाद मुहम्मद गोरी ने मुल्तान एवं सिन्ध के मार्ग को बदलकर पंजाब के मार्ग को चुना।
- 1181 ई. में इसने पंजाब पर आक्रमण किया। यहां पर गजनी वंश का खुशरो मलिक शासक था। इसने युद्ध के स्थान पर मुहम्मद गोरी को अत्यधिक उपहार देकर सन्धि कर ली।
- 1191 ई. में तराईन का प्रथम युद्ध मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी पराजित हुआ और गजनी चला गया।
- 1192 ई. में तराईन का द्वितीय युद्ध हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान पराजित हुआ और बन्दी बना लिया गया। इसने गोरी की अधीनता स्वीकार कर ली परन्तु बाद में विद्रोह कर दिया और मारा गया।

**मुहम्मद गोरी के भारतीय अभियान**

| वर्ष | राज्य स्थान | राजा/वंश |
|---|---|---|
| 1 1175 ई. | मुल्तान | करमाथी वंश |
| 2. 1178 ई. | गुजरात | भीम द्वितीय |
| 3. 1181 ई. | पंजाब | खुशरोमलिक |
| 4. 1186 ई. | पंजाब | खुशरोमलिक |
| 5. 1191 ई. | तराईन का प्रथम युद्ध | पृथ्वीराज चौहान |
| 6. 1192 ई. | तराईन का द्वितीय युद्ध | पृथ्वीराज चौहान |
| 7. 1194 ई. | कन्नौज (चंदावर का युद्ध) | जय चन्द्र |
| 8. 1195 ई. | बयाना | कुमारपाल |
| 9. 1205 ई. | खोक्खरों से युद्ध | — |

Parksha Manthan

- 1194 में गोरी ने कन्नौज पर आक्रमण किया इस समय यहां का शासक जयचन्द था। चन्दावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी से जयचन्द पराजित हुआ और मारा गया। इस युद्ध के बाद कन्नौज और वाराणसी पर गोरी का अधिकार हो गया।

| मुहम्मद गोरी के सेनापतियों द्वारा विजित क्षेत्र | |
|---|---|
| 1. कुतुबुद्दीन ऐबक | -1196-अजमेर विजय |
| | 1197 बदायूं विजय |
| | 1202-3-बुंदेलखंड विजय |
| 2. बख्तियार खिलजी | -1197 - बिहार विजय |
| | 1205 - बंगाल विजय |

### महत्वपूर्ण तथ्य

- महमूद गजनवी यामिनी वंश से सम्बन्धित तुर्क था।
- महमूद गजनवी कश्मीर अभियान किया था लेकिन यह अभियान असफल रहा।
- अलबरूनी (बाहरी) का वास्तविक नाम अबू रैहान था। यह ख्वारिज्म का रहने वाला था लेकिन गजनी में बस गया था।
- अलबरूनी भारत में आकर संस्कृत भाषा का अध्ययन किया।
- मुहम्मद गोरी शंसबानी वंश का तुर्क था। इसका वास्तविक नाम शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी था।
- मुहम्मद गोरी का साधारण सेनापति बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला बौद्ध विहार नालंदा बौद्ध विहार एवं सोमपुर बौद्ध विहार को तहस-नहस करके सैकड़ों भिक्षुओं को मौत के घाट उतार दिया।
- मुहम्मद गोरी ने सर्वप्रथम कुतुबुद्दीन ऐबक को हांसी की इक्ता प्रदान किया था। 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को विजित भारतीय प्रदेशों का प्रतिनिधि शासक नियुक्त किया।

## दिल्ली सल्तनत 1206 से 1526

- दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत 1206 से 1526 तक इतिहास का अध्ययन किया जाता है। इन 320 वर्षों के इतिहास में पांच वंशो ने शासन किया।

| सल्तनत के राजवंश | | |
|---|---|---|
| 1. गुलाम वंश | - | (1206-1290) |
| 2. खिलजी वंश | - | (1290-1320) |
| 3. तुगलक वंश | - | (1320-1414) |
| 4. सैय्यद वंश | - | (1414-1451) |
| 5. लोदी वंश | - | (1451-1526) |

### गुलाम वंश

- इस वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक गोरी का दास था इसलिए इस वंश को दास या गुलाम वंश के नाम से जाना जाता है।
- कुछ विद्वान इसे मामलूक वंश का नाम देते हैं। जिसका तात्पर्य है स्वतन्त्र माता पिता की गुलाम सन्तान। इसे आरम्भिक तुर्क वंश के नाम से भी जाना जाता है।

#### कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

- यह दिल्ली सल्तनत का संस्थापक एवं मुहम्मद गोरी का दास था। मुहम्मद गोरी ने अपने दासों को पुत्र की तरह माना।
- गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक 1206 में स्वतंत्र शासक बना और लाहौर को अपनी राजधानी बनायी।
- जब यह स्वतंत्र शासक बना तब दासता से मुक्त नहीं था इसलिए इसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि मलिक और सिपहसालार की उपाधियों के साथ शासन किया।

- 1208 में ऐबक गजनी गया यहीं पर मुहम्मद गोरी के भतीजे गयासुद्दीन महमूद ने इसे दासता का मुक्ति पत्र भेजा और उसे सुल्तान की उपाधि प्रदान की।
- मिन्हाज-उस-सिराज ने इसे हातिमताई कहा है।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान का खेल खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मृत्यु हो गई।
- इसकी मृत्यु के बाद इसके तथाकथित पुत्र आरामशाह को लाहौर में गद्दी पर बैठाया गया जो इल्तुतमिश से पराजित होने से पहले 8 महीने तक शासन किया।

**ऐबक की उपाधियां**

- लखा या लाखबख्श
- हातिमताई
- कुरान खां

**ऐबक के दरबारी विद्वान**

1. हसन निजामी
2. फख-ए-मुदाब्बिर

## इल्तुतमिश (1211-1236) ई.

- इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दास था। ऐबक अपनी दासता से मुक्ति से पहले ही 1206 में इल्तुतमिश को दासता से मुक्त कर दिया था।
- इल्तुतमिश सुल्तान बनने से पहले बदायूं का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाई।

### 1. चंगेज खां की समस्या

1220-21 ई. में मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खां ख्वारिज्म के राजकुमार जलालुद्दीन मांगबर्नी का पीछा करते हुए भारत की सीमा तक आ पहुंचा। इल्तुतमिश ने मांगबर्नी को शरण न दे कर चंगेज खां के आक्रमण से अपनी रक्षा की।

### 2. नासिरुद्दीन कुबाचा की समस्या

कुबाचा सिन्ध एवं मुल्तान का प्रभारी था। इसने लाहौर पर अधिकार कर लिया था। 1217 में मंसूरा के युद्ध में इल्तुतमिश ने कुबाचा को पराजित करके लाहौर छीन लिया। 1227 में इल्तुतमिश सिन्ध मुल्तान पर आक्रमण करके कुबाचा को पराजित किया। कुबाचा अपने जीवन की रक्षा के लिए सिन्धु नदी में कूद गया और डूबकर मर गया।

### 3. बंगाल विजय

- इस समय बंगाल का शासक गयासुद्दीन स्वतंत्र रूप से शासन कर रहा था। 1226 में इल्तुतमिश के पुत्र नासिरूद्दीन महमूद ने बंगाल पर आक्रमण किया। युद्ध में गयासुद्दीन पराजित हुआ और मारा गया। इस तरह बंगाल पर इल्तुतमिश का अधिकार हुआ। इल्तुतमिश ने नासिरूद्दीन को यहां का सूबेदार नियुक्त किया। 1229 ई. में नासिरूद्दीन की मृत्यु हो गयी।
- इल्तुतमिश ने तुर्की अमीरों के एक विशिष्ट वर्ग का गठन किया जिसमें उसके 40 विशिष्ट अमीर सम्मिलित थे इन्हें तुर्क-ए-चिहलमानी या दल चालीसा के नाम से जाना जाता था।
- 1229 में इल्तुतमिश बगदाद के अब्बासी खलीफा अलमुस्तान सिर बिल्लाह से मंसूर प्राप्त किया। खलीफा ने इसे सुल्तान-ए-आजम (महान शासक) की उपाधि दी।
- इल्तुतमिश ने शुद्ध अरबी प्रकार के सिक्के प्रचलित किये जिसमें चांदी के टंका तथा तांबे की जीतल नामक मुद्रा थी।
- इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

Pariksha Manthan

### इल्तुतमिश की प्रमुख विजयें

- **1215 ई.** : तराईन के तृतीय युद्ध में ताजुद्दीन एल्दौज को पराजित किया।
- **1217 ई.** : मंसुरा के युद्ध में नासिरुद्दीन कुबाचा को पराजित किया।
- **1226 ई.** : बंगाल विजय की यहां के शासक गयासुद्दीन को पराजित किया।
- **1227 ई.** : सिंध एवं मुल्तान विजय नासिरूद्दीन कुबाचा को पराजित किया।
- **1226 से 1231 तक** : राजपूतों पर विजय।
- **1235** : पंजाब के खोक्खरों पर विजय।

### तुर्क-ए-चिहलगानी/दल चालीसा

- इसकी स्थापना इल्तुतमिश ने किया था। इसमें इसके विश्वासपात्र अमीर होते थे। जिन्हें बड़े-बड़े पद दिये जाते थे। यह एक प्रशासनिक वर्ग था।

### इल्तुतमिश द्वारा प्रचलित सिक्के

1. **टंका** - यह चांदी का सिक्का था।
2. **जीतल** - यह तांबे का सिक्का था। इनमें 1 : 48 का अनुपात था।

## इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी (1236-1266)

- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद दल चालीसा और इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों के बीच भीषण राजनीतिक संघर्ष शुरू हुआ। इस समय दल चालीसा सुल्तान निर्माता की भूमिका अदा कर रहे थे।
- 1236 से 1266 तक के काल को चालीसा का काल कहा जाता है।

## रुकनुद्दीन फिरोज शाह (1236-36 तक)

- इल्तुतमिश अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था लेकिन तुर्की अमीरों ने इसकी इच्छा का सम्मान नहीं किया और इसके पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज शाह को सुल्तान बनाया। सुल्तान की माता शाहतुर्कान थी।
- शाह तुर्कान विद्वानों एवं शेखों को दान दिया करती थीं।

## रजिया (1236-40)

- शाहतुर्कान के आंतक से परेशान होकर रजिया एक दिन लाल वस्त्र धारण (न्याय की याचना का प्रतीक था) कर जुमा के दिन नमाज के समय जनता के बीच में पहुंची और न्याय की मांग की।
- दिल्ली की जनता ने राजमहल पर धावा बोलकर शाहतुर्कान और रुकनुद्दीन को बन्दी बना लिया और रजिया सुल्तान बनी।
- रजिया दिल्ली की पहली और अन्तिम महिला सुल्तान थी। इसे अपने शासन के प्रारम्भ से ही तुर्की अमीरों के विरोध का सामना करना पड़ा।

### रजिया : एक दृष्टि में

- रजिया दिल्ली की प्रथम एवं अंतिम महिला सुल्तान थी।
- रजिया ने जमालुद्दीन याकूत को प्रोन्नत करके अमीर-ए-आखूर (अश्वशाला का प्रधान) नियुक्त किया।
- तुर्की अमीरों ने रजिया का जमालुद्दीन याकूत से प्रेम सम्बन्ध का अफवाह फैलाया।
- रजिया के विरुद्ध षड्यंत्रकारियों का नेता इख्तियारुद्दीन ऐतगिन था।
- रजिया तबरहिन्द के सूबेदार अल्तूनिया से पराजित हुई और अंततः दोनों ने विवाह कर लिया।
- 1240 में कैथल के निकट रजिया एवं अल्तूनिया की हत्या कर दी गई।

## बहरामशाह (1240-42)

- इस समय राज्य की सारी शक्ति ऐतगिन के हाथ में थी। 1241 ई. में मंगोल नेता तायर के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण हुआ। मंगोल पराजित हुए और भाग गए।

Parikshan Manthan

## जलालुद्दीन खिलजी 1290-96 ई.

- यह खिलजी वंश का संस्थापक एवं प्रथम सुल्तान था।
- इसने अपना राज्याभिषेक कैलूगढ़ी (किलोखरी) में कराया और एक वर्ष तक दिल्ली नहीं आया।

**जलालुद्दीन खिलजी के समय की प्रमुख घटनायें**

1. मलिक छज्जू का विद्रोह-1290 ई. में कड़ा का सूबेदार (मलिक छज्जू ) ने विद्रोह कर दिया सुल्तान ने इसके विद्रोह का दमन कर दिया।
2. रणथम्भौर अभियान-1291 में सुल्तान रणथम्भौर अभियान किया लेकिन किले की सुदृढ़ता को देखकर अपना अभियान वापस ले लिया यहां का शासक हम्मीर देव था।
3. मंगोलों का आक्रमण-1292 में अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व में मंगोलों का आक्रमण हुआ जिसमें मंगोल पराजित हुए।
4. सिद्धीमौला को मृत्युदंड-सिद्धिमौला एक सूफी संत थे, सुल्तान की हत्या के षड्यन्त्र रचने की संभावना के कारण मृत्यु दंड दिया गया।
5. देवगिरि अभियान-1296 अलाउद्दीन खिलजी के नेतृत्व में देवगिरि अभियान हुआ। इसने देवगिरि के शासक रामचन्द्रदेव को पराजित कर अपार धन प्राप्त किया।
6. सुल्तान की हत्या-1296 में कड़ा में अलाउद्दीन खिलजी ने सुल्तान की हत्या करा दिया।

## अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)

- अलाउद्दीन खिलजी का बचपन का नाम अली गुरशास्प था।
- अपनी प्रारम्भिक सफलताओं से प्रसन्न होकर यह अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो गया।
- इसने अपने सिक्कों में सिकन्दर-ए-सानी अर्थात् द्वितीय सिकन्दर की उपाधि धारण की।
- दिल्ली के कोतवाल अला-उल-मुल्क के समझाने पर इसने इन योजनाओं का त्याग कर दिया।

**अलाउद्दीन खिलजी के काल में मंगोल आक्रमण**

| क्र. | वर्ष | मंगोल नेता | सल्तनत सेना का नेतृत्व |
|---|---|---|---|
| 1. | 1297 ई. | कादर खां | उलुग खां के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया। |
| 2. | 1299 ई. | सल्दी | जफरखां के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया। |
| 3. | 1299 ई. | कुतलुग ख्वाजा | जफर खां ने पराजित किया। |
| 4. | 1303 ई. | तरगी वेग | सल्तनत सेना ने पराजित किया। |
| 5. | 1305 ई. | अलीवेग, तरतक एवं तरगी वेग | मलिक नायक के नेतृत्व में सेना ने पराजित किया। |
| 6. | 1306ई. | कुबक | मलिक काफूर ने पराजित किया। |

- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने धर्म को राजनीति से अलग रखा।

### विद्रोह

- 1301 ई. में उसके विरुद्ध तीन विद्रोह हुए—
  1. अकत खां का विद्रोह
  2. उमर खां एवं मंगू का विद्रोह
  3. हाजी मौला का विद्रोह
- इन विद्रोहों के निवारण के लिए इसने चार अध्यादेश जारी किये—

### 4 अध्यादेश

1. एक सशक्त (मजबूत) गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की तथा बरीद तथा मुन्हिया या जासूस नियुक्त किये गये।
2. अमीरों के पारस्परिक मेल जोल और विवाह सम्बन्धों पर रोक।
3. शराब और भांग जैसे मादक पदार्थों के प्रयोग पर रोक।

4. अनुदान में दी गयी भूमियां इसने वापस ली और राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिनके पास अत्यधिक सम्पत्ति है। उनसे कर के रूप में ले ली जाये।

### गुजरात विजय - 1299

- इस समय यहां का शासक कर्ण बघेला था।
- 1299 में गुजरात अभियान हुआ और कर्णबघेला बिना युद्ध किये ही भाग गया और देवगिरी में रामचन्द्र देव के यहां शरण ली। इस तरह गुजरात को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया।

### रणथम्भौर विजय - 1300-1301 ई.

- इस समय यहां का शासक हम्मीर देव था।
- 1300 ई. में रणथम्भौर अभियान हुआ और हम्मीर देव के मंत्री रणमल के विश्वासघात के कारण 1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने किले को जीत लिया।

### मेवाड़ विजय 1303 ई.

- इस समय यहां का शासक राणा रतन सेन था।
- 1303 में अलाउद्दीन ने स्वयं मेवाड़ अभियान किया। इस अभियान में अमीर खुसरो भी इसके साथ थे।
- इस अभियान का एक और मुख्य उद्देश्य राणारतन सेन की पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करना था।

### मालवा विजय- 1305 ई.

- इस समय यहां का शासक महलक देव था।
- 1305 में मालवा अभियान हुआ जिसमें महलक देव पराजित हुआ और मालवा को सल्तनत में मिला लिया गया।

### जालौर विजय- 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक कन्नड़ देव था।
- 1311 में जालौर अभियान हुआ। युद्ध में कन्नड़ देव पराजित हुआ और जालौर को सल्तनत में मिला लिया गया।

यह उत्तर भारत की अन्तिम विजय थी।

### दक्षिण भारत की विजय

- दक्षिण अभियान का मुख्य उद्देश्य दक्षिण भारत की सम्पत्ति प्राप्त करना था।

### देवगिरि अभियान 1307 ई.

- इस समय देवगिरि का शासक रामचन्द्रदेव था।
- 1307 में मलिक काफूर ने देवगिरी पर आक्रमण किया।
- रामचन्द्रदेव को परिवार सहित दिल्ली भेज दिया गया। रामचन्द्र देव यहां पर 6 महीने तक रहा और अपनी एक पुत्री का विवाह सुल्तान के साथ कर दिया।
- सुल्तान ने इसे 1 लाख स्वर्ण मुद्रा एवं राय-राया की उपाधि प्रदान की।

### तेलंगाना अभियान 1309-10 ई.

- इस समय तेलंगाना का शासक प्रताप रूद्र देव द्वितीय था। इसकी राजधानी वारंगल थी।
- युद्ध में पराजित होने के बाद प्रताप रूद्र देव द्वितीय बहुत से उपहार के साथ सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इसी उपहार में विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी सम्मिलित था।

### होयसल राज्य पर आक्रमण 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक वीर बल्लाल देव तृतीय था। इसकी राजधानी द्वारसमुद्र थी।

### पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण 1311 ई.

- इस समय यहां का शासक वीर पांड्य था। इसकी राजधानी मदुरा थी।
- 1311 में मलिक काफूर ने मदुरा पर आक्रमण किया लेकिन वीर पाण्ड्य इसके हाथ नहीं लगा। यहां पर इसने भीषण लूट पाट किया।
- दक्षिण का यही एक राजा था जिसने अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार नहीं की।

Parikshā Manthan

## अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण नीति

- अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण नीति क्यों लागू की, इस सन्दर्भ में बर्नी उल्लेख करता है कि बाजार नियंत्रण नीति सेना की सुविधा के लिए लागू की गयी थी।
- बाजार नियंत्रण नीति दो सिद्धांतों पर आधारित थी।

1. उत्पादन लागत के आधार पर वस्तुओं का मूल्य निर्धारण।
2. बाजार में आम जरूरत की वस्तुओं की कमी न हो जाए।

- सुल्तान ने चार प्रकार के बाजार गठित किए-

1. मंडी - यह अनाज का बाजार था। इससे सम्बन्धित 8 जाब्ता (अधिनियम) थे। पहला अधिनियम सर्वाधिक महत्वपूर्ण था जिसने अन्तर्गत सभी प्रकार के अनाजों का मूल्य निर्धारित था। अनाज बाजार के नियंत्रण करने के लिए सुल्तान ने शहना-ए-मंडी की नियुक्ति की और जमाखोरों को कठोर दण्ड की व्यवस्था की।

2. सराय अदल (न्याय का स्थान)

- इससे सम्बन्धित 5 अधिनियम थे। यह एक तरह से सरकारी सहायता प्राप्त बाजार था।
- इसमें विभिन्न प्रकार के कपड़े, मेवे, जड़ी-बूटियां, घी, चीनी आदि बिकता था।

3. घोड़ों, दासों, एवं मवेशियों का बाजार

- इससे सम्बंधित चार सामान्य नियम थे। पहला नियम किस्म के अनुसार मूल्य निर्धारण था। दूसरा नियम दलालों पर कठोर नियन्त्रण था।

4. सामान्य बाजार

- इस बाजार में आम जरूरत की वस्तुएँ बिकती थी जैसे सब्जी, मिट्टी के बर्तन आदि।
- इनका मूल्य भी उत्पादन मूल्य पर आधारित किया गया था।

### मुबारक शाह खिलजी (1316-20)

- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर ने उसके 6 वर्षीय पुत्र सिहाबुद्दीन उमर को सुल्तान बना दिया और स्वयं उसका प्रति शासक बन गया।
- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के 35 दिन बाद मलिक काफूर की हत्या कर दी गयी। इसके बाद अलाउद्दीन खिलजी के एक अन्य पुत्र मुबारक खां को प्रति शासक नियुक्त किया गया।
- मुबारक खां ने शिहाबुद्दीन उमर को बन्दी बना लिया और हत्या करा दी और स्वयं शासक बन गया।
- इसने अलाउद्दीन खिलजी के समय के सभी कठोर कानून समाप्त कर दिये और खलीफा की प्रभुसत्ता स्वीकार नहीं की और स्वयं को खलीफा घोषित किया।

### महत्वपूर्ण तथ्य

- जलालुद्दीन खिलजी के समय में पराजित मंगोल सैनिक इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। ये नव मुस्लिम कहलाये और दिल्ली में जिस क्षेत्र में बसे उसे मंगोलपुरी के नाम से जाना जाता है।
- अलाउद्दीन खिलजी अपने सिक्कों पर सिकन्दर-ए-सानी अर्थात् द्वितीय सिकन्दर की उपाधि अंकित कराई।
- अलाउद्दीन खिलजी ने रामचन्द्रदेव को राय-राया की उपाधि दी।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सैन्य सुधार के अन्तर्गत नकद वेतन देने, घोड़ों को दागने की प्रथा तथा सैनिकों का हुलिया रखने की प्रथा प्रारम्भ की।
- अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजय का श्रेय मलिक काफूर को जाता है।
- मुबारकशाह खिलजी दिल्ली का एकमात्र सुल्तान है जिसने खलीफा की उपाधि धारण की।

## तुगलक वंश (1320-1414)

- दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला यह राजवंश था।

Pariksha Manthan

- इस वंश का संस्थापक गाजी मलिक (ग्यासुद्दीन तुगलक शाह) था।

### ग्यासुद्दीन तुगलक शाह (1320-25)

- कृषि के विकास के लिए इसने नहरों का निर्माण कराया। यह दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने नहर का निर्माण कराया।
- इसने डाक व्यवस्था को श्रेष्ठ और तीव्रगामी बनाया।
- सुल्तान का अपने समय के प्रसिद्ध सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया से सम्बंध बिगड़ गये। सुल्तान जब बंगाल विजय से वापस आ रहा था तब औलिया के पास सन्देश भेजा कि वह उसके दिल्ली पहुंचने से पहले दिल्ली छोड़ दे। औलिया ने उत्तर दिया था 'हुनूज दिल्ली दूरस्थ'।

### मुहम्मद तुगलक (1325-51)

- मुहम्मद तुगलक दिल्ली के सुल्तानों में सर्वाधिक विद्वान सुल्तान था।
- सुल्तान के योगियों से अच्छे सम्बंध थे। जैन आचार्य जिन प्रभासूरि के साथ इसके अच्छे सम्बंध थे।
- सुल्तान हिन्दुओं के त्यौहार होली में भाग लेता था।
- यह दिल्ली का पहला सुल्तान था जो ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के दरगाह के दर्शन के लिए अजमेर तथा सालार मसूद गाजी की दरगाह के दर्शन के लिए बहराइच गया।
- 1340 ई. में इसने सिक्कों पर अपना नाम हटाकर खलीफा मुस्त कफी विल्लाह का नाम अंकित कराया।

### राजधानी परिवर्तन

- सुल्तान ने दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरि) राजधानी बनाने की योजना बनायी।
- इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ाकर वहां राजनीतिज्ञ प्रभुत्व स्थापित करना था इसलिए इसने दिल्ली के मुसलमानों को दौलताबाद जाने का आदेश दिया।

### प्रतीक मुद्रा का प्रचलन (सांकेतिक मुद्रा)

- दिल्ली सल्तनत में दो मुद्राएं प्रचलित थीं—

1. चांदी का टंका
2. तांबे का जीतल

- सुल्तान ने प्रतीक मुद्रा के रूप में कांसे की मुद्रा प्रचलित की जिसका नाम अदली था। यह चांदी के टंके के मूल्य के बराबर थी।

### उद्देश्य

- चौदहवीं शताब्दी में पूरे विश्व में चांदी की कमी हो गयी। यहां की मुख्य मुद्रा चांदी कीं टंका थी।
- चांदी की कमी के कारण मुद्रा की कमी हो गयी जिससे वस्तुओं के मूल्य में कमी हो गयी। अतः सुल्तान ने अपनी आर्थिक शाख बचाने के लिए प्रतीक मुद्रा का प्रचलन किया।
- दुर्भाग्य से इसने मुद्रा निर्माण विधि को गुप्त नहीं रखा और न ही नकली सिक्का बनाने वालों के लिए दण्ड का विधान किया। परिणामस्वरूप घर-घर नकली सिक्का बनने लगे और पूरा बाजार नकली सिक्कों से भर गया।
- इससे पूरा राष्ट्रीय व्यापार ठप हो गया।
- सुल्तान ने जब यह समझा कि योजना असफल हो गयी तब आदेश दिया कि जिन लोगों के पास प्रतीक मुद्रा है उन्हें जमा करके बदले में चांदी के सिक्के ले जाए।

### खुराशान अभियान योजना

- इस समय ईरान में मंगोलों का शासन था जिन्हें इलखान कहा जाता था।
- इस मसय इल्खानों की शक्ति का पतन हो गया था जिसके कारण राजनीतिक अस्थिरता थी।
- इसी राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाने के लिए सुल्तान ने खुराशान अभियान की योजना बनायी।

Pariksha Manthan

- इसके लिए सुल्तान ने मिस्र के शासक से सन्धि की अभियान के लिए 3 लाख 70 हजार सेना तैयार की और सेना को 1 वर्ष का अग्रिम वेतन दिया।
- दुर्भाग्य से मिस्र के शासक से जो सन्धि की थी वह क्रियान्वित नहीं हो पायी क्योंकि मिश्र के शासक को अपदस्थ कर दिया गया और यह योजना असफल रही।

### दोआब में कर वृद्धि योजना

- सुल्तान राजकीय आय को बढ़ाना चाहता था इसलिए करों में वृद्धि की योजना बनायी और इस योजना को सर्वप्रथम दोआब क्षेत्र में लागू किया।
- दुर्भाग्य से जब यह योजना लागू हुई तब दोआब क्षेत्र में अकाल पड़ गया।
- किसान राहत की अपेक्षा कर रहे थे और इसी समय यह योजना लागू हो गयी परिणामस्वरूप किसानों ने विद्रोह कर दिया। यह किसानों का पहला विद्रोह था।
- सुल्तान ने जब यह समझा कि यह योजना असफल हो गयी तब उसने किसानों को कृषि ऋण प्रदान किया जिसे सोनधरी के नाम से जाना जाता है।
- यह दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने प्राकृतिक आपदा के समय किसानों को ऋण दिया।
- बदायूंनी उल्लेख करता है कि इस तरह सुल्तान को अपनी रियाया से और रियाया को अपने सुल्तान से मुक्ति मिली।

**मुहम्मद तुगलक की प्रशासनिक योजनाओं का क्रम**

1. दोआब में कर वृद्धि योजना
2. राजधानी परिवर्तन की योजना
3. प्रतीक मुद्रा की योजना
4. खुराशान अभियान की योजना
5. कराचिल अभियान की योजना
6. कृषि उत्पादन वृद्धि की योजना

### फिरोज शाह तुगलक (1351-1388)

- मुहम्मद तुगलक के न कोई पुत्र था और न ही अपना कोई उत्तराधिकारी।
- यह एक हिन्दू मां का पुत्र था। इसकी मां का नाम नैला देवी था।
- इसने तेलंगाना के एक ब्राह्मण जो इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था मलिक मकबूल को अपना वजीर नियुक्त किया और इसे खान-ए-जहां की उपाधि प्रदान की।
- फिरोज तुगलक अपने प्रशासनिक और लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रसिद्ध था।
- कुछ इतिहासकारों ने इसे सल्तनत काल का अकबर कहा।

### प्रशासनिक एवं लोक कल्याणकारी कार्य

#### 1. ऋणों की समाप्ति

मुहम्मद तुगलक द्वारा किसानों को दिए गये ऋण को इसने माफ कर दिया और ऋण पंजिकाओं को नष्ट करा दिया।

#### 2. राजनीतिक अपराधों के दण्ड विधान में परिवर्तन

इसने राजनीतिक अपराध जैसे राजद्रोह गबन के दण्ड विधान में परिवर्तन करके कठोर दण्ड की जगह सामान्य दण्ड देने की व्यवस्था की।

#### 3. सरकारी सेवाओं को वंशानुगत बनाया

फिरोज तुगलक ने आदेश दिया कि सरकारी सेवक के वृद्ध होने या मृत्यु होने पर उसके पुत्र अथवा दामाद अथवा दास को सरकारी सेवा में नियुक्त किया जाय।

#### 4. बुद्धिजीवियों को राहत

इसने धार्मिक एवं शैक्षिणिक कार्यों से जुड़े मुस्लिम व्यक्तियों को कर मुक्त भूमि अनुदान दिया। उल्लेमाओं (धार्मिक वर्ग) ने इसे दिल्ली का आदर्श सुल्तान घोषित किया।

#### 5. नकद वेतन की जगह जागीर देने की व्यवस्था

Ksha Manthan

### 6. राजस्व व्यवस्था में सुधार

- फिरोज तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान है जिसने राज्य का हासिल तैयार कराया। इसके लिए इसने ख्वाजा हुसामुद्दीन को नियुक्त किया। इन्होंने 6 वर्ष कार्य करके राज्य का हासिल तैयार किया। इनके अनुसार राज्य की वार्षिक आय 6 करोड़ 75 लाख टंका थी।
- फिरोज तुगलक ने 24 ऐसे करों को समाप्त किया जिन्हें सरियत मान्यता नहीं देता। उसने दिल्ली के ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाया।

### 7. मुद्रा में सुधार

फिरोज तुगलक ने 3 प्रकार की मुद्राओं का प्रचलन किया।

1. शंशगनी- यह चांदी की मुद्रा थी यह टंका के मूल्य के 1/6 थी।
2. अध - यह तांबे की मुद्रा थी यह जीतल के मूल्य के 1/2 थी।
3. विख- यह तांबे की मुद्रा थी यह जीतल के मूल्य के 1/4 थी।

### 8. नहरों का निर्माण

सुल्तान ने अनेक नहरों का निर्माण कराया। यह नहरें दिल्ली एवं हरियाणा के मध्य केन्द्रित थी। जो किसान इन नहरों से सिंचाई करते थे उनसे (हर्ब-ए-सर्व) सिंचाई कर लिया जाता था जो उपज का 1/10 होता था।

### 9. दासों से प्रेम

यह सर्वाधिक दास प्रेमी सुल्तान था। इसके पास एक लाख 80 हजार दास थे। इसने दासों को नियंत्रित करने के लिए दीवान-ए-बँदगान अर्थात् दासों का विभाग स्थापित किया। प्रत्येक दास को 10 से 100 टंका वार्षिक वेतन दिया जाता था।

### 10.शिफाखाना की व्यवस्था- (निःशुल्क चिकित्सालय)

सुल्तान ने अनेकों निःशुल्क चिकित्सालय की स्थापना करायी।

### 11. रोजगार दफ्तर की स्थापना

दिल्ली के कोतवाल के माध्यम से इसने बेरोजगारों को रोजगार देने की व्यवस्था की।

### 12. निकाह दफ्तर की स्थापना

इस दफ्तर से गरीब मुसलमानों की कन्याओं के विवाह के लिए आवश्यकता अनुसार 50, 30, 25 टंका धन दिया जाता था।

### 13. कारखानों का निर्माण

सुल्तान ने दो प्रकार के कारखाने का निर्माण कराया।

1. रातिबी कारखाना - इसमें मनुष्यों तथा पशुओं के लिए भोजन तैयार किया जाता था।
2. गैर रातिबी कारखाना - इसमें सुल्तान व उसके परिवार के लोगों एवं अमीरों के दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं तैयार की जाती थीं।

### 14. उद्यानों से प्रेम

सुल्तान को उद्यानों से बहुत प्यार था। इसने केवल दिल्ली के आसपास फलों के 1200 बाग लगवाये।

- फिरोज तुगलक इस्लाम धर्म के प्रति अत्यधिक कट्टर था। इसने स्त्रियों को सन्तों के मकबरों पर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

### फिरोज तुगलक के उत्तराधिकारी

- फिरोज के दो पुत्र थे फतेह खां और मुहम्मद शाह।
- इनमें फतेह खां की मृत्यु फिरोज तुगलक के जीवन काल में हो गयी और मुहम्मद शाह को फिरोजी दासों ने राजधानी से भगा दिया। इस कारण फतेह खां का पुत्र तुगलकशाह द्वितीय उत्तराधिकारी बना जो 1388-89 तक शासन किया।
- 1389 में इसकी मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई अबूबक्रशाह दिल्ली का सुल्तान बना।

Pariksha Manthan

- इसके बाद मुहम्मद शाह 1390 से 1394 तक शासन किया।
- इसके शासन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना 1398 में तैमूर का दिल्ली पर आक्रमण है।
- तैमूर के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन प्राप्त करना था।

## सैयद वंश ( 1414 - 1451 )

### खिज्र खां (1414-21)

- यह सैयद वंश का संस्थापक था। तैमूर ने खिज्र खां को पंजाब और मुल्तान का सूबेदार नियुक्त किया।
- इसने दौलत खां को पराजित करके दिल्ली का स्वतंत्र शासक बना।
- खिज्र खां स्वयं को पैगम्बर मुहम्मद साहब का वंशज मानता था।
- खिज्र खां दिल्ली का स्वतंत्र शासक था। लेकिन यह स्वयं को तैमूरियों का राज्यपाल मानता था।
- इसने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की और न ही अपने नाम का सिक्का जारी किया।
- इसने रैयत-ए-आला की उपाधि के साथ शासन किया।

### मुबारकशाह (1421-34)

- इसने विदेशी प्रभुसत्ता को नकार दिया और सुल्तान की उपाधि ग्रहण की। इसने मालवा के शासक हुसंगशाह और जौनपुर के शासक इब्राहिमशाह शर्की से अपने दुर्बल राज्य की रक्षा की।
- दिल्ली का एक मात्र सुल्तान है जो पिता के जीवनकाल में सुल्तान बना।

### मुहम्मद शाह (1434-43)

- इसके समय में 1440 ई. में मालवा के शासक महमूद शाह खिलजी ने दिल्ली पर आक्रमण किया। तीन दिनों के भीषण युद्ध के बाद दोनों में संधि हो गयी और महमूद शाह खिलजी वापस मालवा चला गया।

### अलाउद्दीन आलम शाह (1443-1451)

- यह सैयद वंश का अन्तिम और सर्वाधिक अयोग्य शासक था।
- इसका अपने वजीर हमीद खां से झगड़ा हो गया और नाराज होकर यह बदायूं चला गया।

## लोदी वंश ( 1451-1526 )

- लोदी वंश के शासक अफगान थे। यह अफगानों की साहूखेल शाखा से सम्बंधित थे।

### बहलोल लोदी (1451-89)

- यह लोदी वंश का संस्थापक था। यह दिल्ली के सुल्तानों में सर्वाधिक समय तक शासन किया।
- इसने अफगान अमीरों के साथ समानता का व्यवहार किया।
- यह कभी ऊंचे सिंहासन पर नहीं बैठा बल्कि यह कालीन पर बैठता था और इसके चारों तरफ इसके अमीर बैठते थे।
- इसने बहलोली नामक चांदी की मुद्रा प्रचलित की जो टंका के मूल्य का 1/3 थी। यह अकबर के समय तक विनिमय का माध्यम बनी रही।
- बहलोल लोदी जौनपुर के शासक हुसैनशाह शर्की को पराजित कर जौनपुर दिल्ली में मिला लिया।

### सिकन्दर लोदी (1489-1517)

- यह एक हिन्दू मां का पुत्र था। इसकी मां का नाम जैबन्द था।
- 1504 में इसने आगरा नगर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- इसने गज-ए-सिकन्दरी नामक एक प्रामाणिक नाप की इकाई का प्रचलन किया।
- इसने गरीबों और असहायकों को भत्ते देने की व्यवस्था की और जब यह अपने कपड़े और बिस्तर बदलता था तो उसे बेच देता था और उससे अनाथ कन्याओं का विवाह करता था।

Pariksha Manthan

- यह एक कवि था। यह फारसी भाषा में गुलरूखी उपनाम से कविताएं लिखता था।

### इब्राहिम लोदी (1517-26)

- यह दिल्ली सल्तनत तथा लोदी वंश का अन्तिम शासक था।
- गद्दी पर बैठते ही इसने ग्वालियर अभियान किया और यहां के शासक विक्रमजीत को पराजित करके इसे अपने अधीन कर लिया।
- इस विजय से उत्साहित होकर इसने मेवाड़ अभियान किया लेकिन यहां के शासक राणासांगा से यह पराजित हुआ।
- 1525 में बाबर पंजाब को जीतकर आगे बढ़ा और 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के मैदान में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच युद्ध हुआ।
- इस युद्ध में इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और मारा गया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध का परिणाम यह रहा कि भारत में लोदी वंश के शासन का अन्त हुआ और मुगल वंश की स्थापना हुयी।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली का एक मात्र सुल्तान है जो युद्ध भूमि में लड़ता हुआ मारा गया।

## सल्तनतकालीन प्रशासन

### केन्द्रीय प्रशासन

- केन्द्रीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु राजधानी होती थी।
- ऐबक के समय में लाहौर, इल्तुमिश से लेकर बहलोल लोदी के समय तक दिल्ली और सिकन्दर लोदी तथा इब्राहिम लोदी के समय में राजधानी आगरा थी।

### सुल्तान

- केन्द्रीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु सुल्तान होता था।
- इसके पद को दैवी प्रकृति का घोषित किया गया।

### सुल्तान के पदाधिकारी

नाइब-ए-मुमालिकात- सुल्तान के बाद यह राज्य का प्रमुख पदाधिकारी था। इस पद का सृजन बहरामशाह के काल में हुआ जब उसने ऐतगिन को नियुक्त किया।

- इसके कार्य सुल्तान की अनुपस्थिति में सुल्तान के सभी कार्यों को सम्पन्न करना था। इस पद का महत्व सुल्तान विशेष की स्थिति पर निर्भर करता था।

वजीर-इसके कार्यालय को दिवाने-ए-विजारत के नाम से जाना जाता था।

- तुगलक काल विजारत की संस्था का चरमोत्कर्ष काल था। इस काल में वजीरों को न केवल अत्यधिक प्रतिष्ठा मिली बल्कि अत्यधिक वेतन भी दिया जाता था।
- कार्यालय में दो वरिष्ठ अधिकारी होते थे -
  1. मुशरिफ-महालेखाकार
  2. मुस्तौफी - महालेखा परीक्षक

दीवान-ए-आरिज (सैन्य विभाग)- इस विभाग के प्रमुख अधिकारी को आरिज-ए-मुमालिक के नाम से जाना जाता था। इस विभाग की स्थापना बलबन ने की थी। इसका मुख्य कार्य सेना की भर्ती करना था। सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति करना और उन्हें सुसज्जित करना भी इसका कार्य था।

- यह सेना का सेनापति नहीं होता था।

दीवान-ए-इंशा (आलेख विभाग)-इस विभाग का प्रमुख अधिकारी दबीर-ए-खास या अमीर मुंशी होता था। इसका मुख्य कार्य शाही फरमानों को लिपिबद्ध करना और उन्हें सम्बद्ध विभागों तक पहुंचाना था।

दीवान-ए-रसालत-इसका प्रमुख अधिकारी रसालत-ए-मुमालिक होता था जो विदेश मंत्री की हैसियत से कार्य करता था।

सद्र-उस-सुदूर-यह धार्मिक मामलों में सुल्तान का मुख्य सलाहकार था। यह सुल्तान की तरफ से धार्मिक संस्थाओं

Parikshā Manthan

शैक्षणिक संस्थाओं और व्यक्तियों को अनुदान देता था।

अमीर-ए-हाजिब-इसे अमीर बारबक भी कहा जाता था। यह दरबारी मामलों की देखभाल करनेवाला प्रमुख अधिकारी था।

दीवान-ए-वकूफ-जलालुद्दीन खिलजी ने खर्चे के ब्योरे को तैयार करने के लिए इसकी स्थापना की।

दीवान-ए-अमीर कोही-मुहम्मद तुगलक ने सर्वप्रथम इस विभाग की स्थापना की। इसका मुख्य कार्य मालगुजारी व्यवस्था की देखभाल एवं भूमि को खेती के योग्य बनाना होता था।

दीवान-ए-खैरात-यह दान विभाग था। इसकी स्थापना भी फिरोज तुगलक ने की।

### न्याय व्यवस्था

- सल्तनत का सर्वोच्च न्यायाधीश स्वयं सुल्तान होता था।
- सुल्तान के न्यायालय को दीवान-ए-मजालिम के नाम से जाना जाता था।

**इस्लामी कानून के स्रोत**

1. **कुरान** - दैवी रहस्यों का उद्घाटन है।
2. **हदीस** - कानून एवं धर्म के सम्बन्ध में पैगम्बर साहब की मान्यतायें एवं निर्देश हैं।
3. **इजमा** - प्रथम दो श्रोतों के आधार पर मुस्लिम न्यायविदों द्वारा दिये गये निर्णय।
4. **कयास** - तर्क एवं विश्लेषण के आधार पर कानून की व्याख्या का तरीका

### भू -राजस्व व्यवस्था

- तुर्की साम्राज्य की स्थापना के बाद प्राचीन कर व्यवस्था को समाप्त नहीं किया गया बल्कि पुराने शासक वर्ग को बनाये रखा गया था।
- प्रारम्भिक वर्षों में इन शासकों से वसूल किये गये कर ही राजकीय आय का मुख्य श्रोत था।
- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का प्रथम सुल्तान था। जिसने भू-राजस्व व्यवस्था में सुधार किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने हिन्दू जमींदारों के अधिकारों को समाप्त किया और उन्हें भी कर देने के लिए बाध्य किया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने पुनः भू राजस्व की दर 1/3 कर दिया एवं जमींदारों के कुछ अधिकारों को वापस किया।

**भू-राजस्व निर्धारण की पद्धतियां**

1. **बंटाई पद्धति**-इसके अन्तर्गत 3 प्रकार से बंटाई की जाती थी—
   (i) खेत बंटाई- खेत में खड़ी फसल का बँटवारा।
   (ii) लंक बंटाई- कटी हुई फसल का बंटवारा
   (iii) रास बंटाई - अनाज का बंटवारा
2. **मसाहत पद्धति**-इसका प्रचलन अलाउद्दीन खिलजी ने किया था। इसके अन्तर्गत कृषि योग्य भूमि की पैमाइश की गई और प्रति बिस्वा उपज का निर्धारण करके उपज का 1/2 भाग लेना।
3. **मुक्ताई पद्धति** - सुल्तान द्वारा जमींदारों पर कर निर्धारित कर देना। इसके बाद जमींदार किसानों पर कर निर्धारित करते थे।
   - सल्तनत काल में सर्वाधिक लोकप्रिय पद्धति बंटाई पद्धति थी।

**सल्तनतकालीन प्रमुख कर**

1. **खराज/खिराज**- यह गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर था। यह सामान्यतः उपज का 1/3 भाग लिया जाता था लेकिन अलाउद्दीन खिलजी ने 1/2 भाग वसूल किया।
2. **उश्र**- यह मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर जो 1/5 से 1/10 के बीच में लिया जाता था।
3. **खुम्स**-सैन्य अभियानों के समय लूटे गये धन में राज्य का हिस्सा था। शरियत के अनुसार 1/5 राज्य

का तथा 4/5 सैनिकों का होता था। लेकिन अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद तुगलक ने 4/5 स्वयं लिया तथा 1/5 सैनिकों को दिया।

4. **जजिया**-यह गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला व्यक्ति कर था इसे मुंडकर भी कहा जाता था। स्त्री, बच्चे वृद्ध अपंग ब्राह्मण जजिया कर से मुक्त होते थे। जो जजिया देता था। उसे जिम्मी कहा जाता था। भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध के हिन्दुओं से जजिया वसूल किया था।

5. **जकात**-यह मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था। यह धनी मुसलमानों की आय का 21/2 (ढाई) प्रतिशत होता था।

6. **हर्ब-ए-शर्ब**-यह सिंचाई कर था जो उपज का 1/10 होता था।

7. **चरी**-चारागाह कर था।

8. **घर** - गृहकर था इन दोनों करो को अलाउद्दीन खिलजी ने वसूल किये थे।

9. **तरकात**-यह लावारिश सम्पत्ति की जब्ती से होने वाली आय थी।

## सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

- तुर्क आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण से पहले पश्चिम एवं मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिण-पश्चिम यूरोप की कला शैलियों की विशेषताओं को मिलाकर अपनी एक विशिष्ट स्थापत्य कला शैली का विकास कर लिया था।
- इस्लाम में जीव-जन्तुओं के चित्र बनाने एवं मूर्तियां बनाने पर प्रतिबन्ध था। इनकी जगह फूल-पत्तियां ज्यामितीय चित्र एवं कुरान की आयतों को पत्थरों पर खोदते थे और इस पर नक्काशी की जाती थी। अलंकरण की इस संयुक्त विधि को अरबस्क विधि का नाम दिया गया है।
- चित्तौड़ का 'कीर्ति स्तंभ' राणा कुंभा के शासनकाल में निर्मित हुआ था। इस कीर्ति स्तंभ को राणा कुंभा की उपलब्धियों का स्मारक माना जाता है। इस स्तंभ का निर्माण राणा कुंभा ने महमूद खिलजी पर विजय प्राप्त कर उसकी स्मृति में कराया था। राणा कुंभा विद्वान के साथ-साथ महान संगीतकार एवं कुशल वीणावादक था।
- भारत का प्रथम मकबरा जो शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित हुआ वह था बलबन का मकबरा। बलबन ने मेहरौली क्षेत्र में स्वयं के मकबरे का निर्माण लाल पत्थर से कराया था। इसमें तीन कक्ष बनाए गये थे जिसमें बीच के कक्ष में बलबन की कब्र एवं शेष कक्ष में उसके परिवार के लोगों की कब्र है।

**प्रमुख इमारतें**

| इमारत का नाम | स्थान | निर्माता का नाम | विशेषता |
|---|---|---|---|
| 1. कुब्बवत-उल इस्लाम मस्जिद | दिल्ली | कुतुबुद्दीन ऐबक | इसका निर्माण 27 हिन्दू एवं जैन मन्दिरों की सामग्री से किया गया था। यह दिल्ली की पहली इस्लामी इमारत है। |
| 2. अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद | अजमेर | कुतुबुद्दीन ऐबक | एक संस्कृत विद्यालय को तोड़वाकर इसका निर्माण कराया गया। |
| 3. कुतुबमीनार | दिल्ली | कुतुबुद्दीन ऐबक | प्रथम मंजिल का निर्माण ऐबक ने कराया था। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | पूरा इल्तुतमिश एवं इल्तुतमिश ने कराया। इसका नाम सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर है।<br>- मूल रूप में 4 मंजिला लाल पत्थर की है।<br>- फिरोज तुगलक के समय में बिजली गिरने से चौथी मंजिल ध्वस्त हो गई तब फिरोज तुगलक संगमरमर से चौथी एवं पांचवी मंजिल का निर्माण कराया। |
| 4. सीरी का किला | दिल्ली | अलाउद्दीन खिलजी | मंगोलों से दिल्ली की रक्षा हेतु इस मजबूत किले का निर्माण कराया। |
| 5. अलाई दरवाजा | दिल्ली | अलाउद्दीन खिलजी | सल्तनत काल की पहली इमारत जिसमें संगमरमर का प्रयोग हुआ है। |
| 6. जमायत-ए-खाना मस्जिद | दिल्ली | अलाउद्दीन खिलजी के समय में खिज्र खां द्वारा | सल्तनत काल की पहली इमारत जो शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित है। |
| 7. छप्पन कोट्ट | दिल्ली | गयासुद्दीन तुगलक | यह गयासुद्दीन तुगलक का महल था। यह सुनहरी ईंट से बना था। |
| 8. गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा | दिल्ली | गयासुद्दीन तुगलक | यह मकबरा झील के मध्य निर्मित किया गया था। |
| 9. सिकन्दर लोदी का मकबरा | दिल्ली | सिकन्दर लोदी | भारत का पहला मकबरा है जिसमें दोहरे गुम्बद का निर्माण किया गया है। |
| 10. मोठ की मस्जिद | दिल्ली | सिकन्दर लोदी के वजीर मिंया भूआ ने बनवाया | सामने की दीवार में पांच मेहराबदार द्वार हैं। |

## सल्तनतकालीन साहित्य

- अमीर खुसरो को 'हिन्दी खड़ी बोली' का जनक माना जाता है। ये एक नई काव्य शैली 'सबक-ए-हिन्दी' अर्थात् हिन्दुस्तानी शैली के जन्मदाता थे। इन्हीं को हिन्दवी का भी जनक माना जाता है।
- अमीर खुसरो का जन्म पटियाली नामक स्थान में हुआ था। पहले यह स्थान एटा जिले में था। वर्तमान में यह कासगंज में स्थित है।

| सल्तनत कालीन साहित्य | | |
|---|---|---|
| **ग्रंथ का नाम** | **लेखक का नाम** | **विशेषता** |
| 1. तारीख-ए-हिन्द (अरबी में) | अलबरूनी (अबू रैहान) | 11वीं शताब्दी के भारत के सामाजिक धार्मिक जीवन का वर्णन |
| 2. ताज-उल-मासीर | हसन निजामी | प्रथम ऐसा ग्रंथ जो भारत में मुस्लिम शासन के प्रारम्भ का वर्णन करता है। |
| 3. तबकात-ए-नासिरी | मिन्हाज-उस-सिराज | इसमें 1259 ई. तक का इतिहास संकलित है। |
| 4. मिफ्ताह-उल-फुतूह | अमीर खुशरो ने बलबन से लेकर | जलालुद्दीन खिलजी के समय का विवरण है। |
| 5. खजाइन-उल-फुतूह | गयासुद्दीन तुगलक तक 7 सुल्तानों के दरबार की शोभा बढ़ाई। इन्हें | अलाउद्दीन खिलजी के विजयों का वर्णन है। |
| 6. देवलरानी खिज्रखानी | तूती-ए-हिन्द भी कहा जाता था। | खिज्र खां एवं देवलरानी की प्रेम कथा का वर्णन है। |
| 7. तुगलक नामा | ,, ,, | गयासुद्दीन तुगलक के समय का वर्णन है। |
| 8. तारीख-ए-फिरोजशाही | जियाउद्दीन बर्नी यह सल्तनत काल के प्रमुख इतिहासकार थे। | फिरोज तुगलक को समर्पित है इसमें 1259 से लेकर फिरोज तुगलक के शासन तक का इतिहास है। |
| 9. फतवा-ए-जहांदारी | जियाउद्दीन बर्नी | तारीख-ए-फिरोजशाही का पूरक ग्रंथ है। |
| 10. तारीख-ए-फिरोजशाही | शम्स-ए-सिराज अफीफ | फिरोज के शासनकाल को समर्पित है। |
| 11. फुतूह-उस-सलातीन | इसामी यह बहमनी सुल्तान बहमनशाह के दरबार में रहता था | महमूद गजनवी से लेकर मुहम्मद तुगलक तक का विवरण है इसमें मुहम्मद तुगलक की अत्यधिक आलोचना है। |
| 12. किताब-उर-रेहला (अरबी में) | इब्नबतूता यह मुहम्मद तुगलक के शासन काल में मोरक्को से दिल्ली आया। मुहम्मद तुगलक ने इसे दिल्ली का काजी भी नियुक्त किया था। | इस ग्रंथ का एक भाग दिल्ली सल्तनत को समर्पित है। |
| 13. फुतुहात-ए-फिरोजशाही | फिरोजशाह तुगलक | यह फिरोजशाह तुगलक की आत्मकथा है। |

## दिल्ली सल्तनत : विविध

- 'दस्तार बन्दान' (पगड़ी धारण करने वाले) सल्तनतकाल में उलेमा वर्ग जो उच्च धार्मिक एवं न्यायिक पदों पर आसीन थे, को कहा जाता था। वस्तुतः ये लोग आधिकारिक रूप में सिर पर पगड़ी पहनते थे।
- तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में भारतीय कृषक गेहूं, धान, जौ, चना, मटर, सरसों, तिल, कपास, गन्ना आदि की खेती करते थे लेकिन मक्का की खेती नहीं करते थे। इब्नबतूता ने भी अपने ग्रंथ 'रेहला' में उल्लेख किया है कि भारतीय किसान वर्ष में तीन फसल उगाते थे। यहां गेहूं, धान, गन्ना एवं कपास की खेती बड़े पैमाने पर होती थी।
- जौहर प्रथा की शुरुआत राजपूतों के समय में हुई थी। वस्तुतः राजपूतों ने मुस्लिमों आक्रमणकारियों से स्त्रियों के सम्मान की रक्षा हेतु यह प्रथा प्रारम्भ की थी। जब राजपूत राजा युद्ध में पराजित हो जाते थे तो राजपूत महिलाएं सम्मिलित रूप से अग्नि की चिता जलाकर उसमें जल जाती थीं। इसी प्रथा को जौहर प्रथा कहते थे। सती प्रथा एवं बाल विवाह की प्रथा पहले से चली आ रही थी।
- भारत में 'पोलो' खेल का प्रचलन तुर्कों ने किया था। गुलाम वंश के शासक कुतुबुद्दीन ऐबक लाहौर में 'पोलो' का खेल खेलते समय घोड़े से गिर गया और अंततः उसकी मृत्यु हो गयी थी।

## क्षेत्रीय राज्य

### विजयनगर साम्राज्य ( 1336-1678 ई. )

- मध्यकाल में स्थापित होने वाला प्रथम हिन्दू राज्य विजयनगर साम्राज्य था।
- इसकी स्थापना हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने 1336 ई. में माधव विद्यारण्य नामक विद्वान ब्राह्मण की प्रेरणा से किया था।
- हरिहर एवं बुक्का द्वारा प्रारम्भ में स्थापित हम्पी (हस्तिनावति) नामक राज्य ही कालांतर में विजयनगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- विजयनगर साम्राज्य 342 वर्षों तक रहा इस बीच में कुल चार राजवंशों ने शासन किया—

  1. संगम वंश 2. सालुव वंश 3. तुलुव वंश 4. अरबिंदु वंश

### संगम वंश ( 1336-1486 ई. )

- संगम वंश की स्थापना हरिहर बुक्का ने की।

#### हरिहर प्रथम

- संगम वंश का प्रथम शासक हरिहर प्रथम था। इसने आनेगोन्दी को अपनी राजधानी बनाई।
- हरिहर प्रथम ने अपने शासन के 17 वर्ष बाद विजयनगर को अपनी राजधानी बनाई। फिर इसी नगर के नाम पर विजयनगर साम्राज्य का नाम पड़ा।

#### बुक्का प्रथम

- हरिहर प्रथम के बाद बुक्का प्रथम शासक बना। इसने मदुरा को जीतकर अपने राज्य में मिलाया।
- इसने वैदिक धर्म को प्रोत्साहन दिया। इस उपलक्ष्य में 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की।

#### हरिहर द्वितीय

- हरिहर द्वितीय, बुक्का प्रथम का पुत्र था। यह विजयनगर का प्रथम शासक था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।

#### देवदाय प्रथम

- इसके समय में इटली का एक यात्री निकोलीकोंटी ने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की।

Pariksha Manthan

### देवराय द्वितीय

- देवराय द्वितीय इस वंश का सबसे महान शासक था, जो जनसाधारण में 'इंद्र का अवतार' माना जाता था।
- इसके समय में फारस के शासक शाहरूख ने अब्दुल रज्जाक को अपना दूत बनाकर 1442 ई. में इसके दरबार में भेजा था।
- देवराय द्वितीय ने बड़ी संख्या में अपनी सेना में मुसलमानों को भर्ती किया और उनके उपयोग के लिए एक मस्जिद का निर्माण कराया।

### विरुपाक्षराय

- यह संगम वंश का अन्तिम शासक था।

## सालुव वंश ( 1486 - 1505 ई. )

- सालुव वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था।

### इम्माडि नरसिंह

- सालुव नरसिंह के दो पुत्र थे। तिम्मा व इम्माडि नरसिंह।
- तिम्मा की हत्या के पश्चात् इम्मडि नरसिंह को गद्दी पर बैठाया गया।
- इम्माडि नरसिंह के वयस्क होने पर उसका अपने संरक्षक नरसा नायक से विवाद हो गया।

## तुलुव वंश ( 1505-1565 ई. )

### वीर नरसिंह

- तुलुव वंश की स्थापना वीर नरसिंह ने की। इसने केवल चार वर्ष तक शासन किया।
- इम्माडि नरसिंह की हत्या कर सिंहासन पर अधिकार करने के कारण उसके विरुद्ध असंतोष फैला गया।

### कृष्णदेव राय

- कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य का सबसे महान शासक था। इसका शासन काल सफलताओं का युग था।
- इसने बीजापुर राज्य से रायचुर का द्वाबा जीत लिया। इसी तरह इसने उड़ीसा के शासक प्रताप रुद्रदेव गजपति को चार बार पराजित कर आंध्र के तटवर्ती क्षेत्रों को जीत लिया और अन्ततः दोनों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुआ।
- इसी तरह कृष्णदेवराय ने बीदर पर आक्रमण किया और यहां के शासक महमूदशाह को उसके वजीर बरीदशाह के चंगुल से मुक्त कराकर पुनः गद्दी पर बैठाया। इस उपलक्ष्य में कृष्णदेवराय ने 'यवनराजस्थापनाचार्य' की उपाधि धारण की।
- कृष्णदेवराय के दरबार में तेलगु के आठ प्रसिद्ध विद्वान रहते थे जिन्हें 'अष्टदिग्गज' कहा जाता है।
- कृष्णदेवराय स्वयं विद्वान था। इसे आंध्रभोज/दक्षिण का भोज कहा जाता है।
- कृष्णदेवराय के बाद इसका भतीजा अच्युतराय शासक बना।

### सदाशिवराय

- अच्युतराय के बाद कृष्णदेवराय का पुत्र सदाशिवराय शासक बना।
- सदाशिवराय का प्रधानमंत्री रामराय था जो प्रतिशासक के रूप में सारी शक्तियां अपने हाथों में ले लिया।
- अली आदिलशाह ने रामराय से कुछ किलों की मांग की और रामराय ने इंकार कर दिया। परिणामस्वरूप 23 जनवरी, 1565 ई. में तालीकोटा का युद्ध हुआ। इस युद्ध को बनहट्टी/राक्षसी तंगड़ी का युद्ध/कृष्णा नदी का युद्ध के नाम से जाना जाता है।

## आरबिदु वंश ( 1570-1678 ई. )

- आरबिंदु वंश का संस्थापक तिरुमल था।
- तिरुमल का पौत्र वेंकट द्वितीय इस वंश का सबसे महान शासक था।
- वेंकट द्वितीय के शासन काल के समय राजा बोडियार ने मैसूर राज्य की स्थापना की।

Pariksha Manthan

- वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरि को अपनी राजधानी बनाई। इसके समय में विदेशों के अनेक राजनयिक मण्डल यहां आए।
- वेंकट द्वितीय को चित्रकला में अत्यधिक रुचि थी। इसे ईसाई धर्म से सम्बंधित चित्र पसंद थे।

## विजयनगर कालीन प्रशासन

- विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन केन्द्रोमुखी प्रशासन था।
- विजयनगर राज्य का स्वरूप राजतंत्रात्मक था जिसका प्रमुख राजा स्वयं होता था।
- विजयनगर के राजा 'राय' की उपाधि धारण करते थे और स्वयं को ईश्वरतुल्य मानते थे।
- इस काल में राजा की सहायता के लिए दो परिषदें होती थी—
    1. **राज्य परिषदें**-इसका स्वरूप बहुत व्यापक होता था। राजा इसी की सलाह पर नीतियों को बनाता था। इसकी स्थिति औपचारिक अधिक होती थी।
    2. **मंत्रिपरिषद**-इसका स्वरूप छोटा होता था जिसमें कुल 20 सदस्य होते थे। इसमें प्रधानमंत्री, उपमंत्री और विभागों के सदस्य होते थे। इसमें विद्वान राजनीति में निपुण 50-70 वर्ष आयु वाले निपुण व्यक्ति को इसका सदस्य बनाया जाता था। इसका अध्यक्ष प्रधानी व महाप्रधानी (प्रधानमंत्री) होता था। राजा व युवराज के बाद इसका स्थान था।

### भूराजस्व व्यवस्था

- विजयनगर साम्राज्य में राजकीय आय का मुख्य स्रोत भूराजस्व था जिसे 'शिष्ट' कहा जाता था।
- भूराजस्व भूमि की उपज के आधार पर निर्धारित किया जाता था जो सामान्यतः 1/3-1/4 के बीच था।
- 16वीं शताब्दी के मध्य में सदाशिवराय के काल में नाइयों को व्यवसायिक कर से मुक्त कर दिया गया था।

### न्याय व्यवस्था

- विजयनगर के शासकों ने चार प्रकार के न्यायालयों का गठन किया था—
    1. **प्रतिष्ठिता न्यायालय**-यह न्यायालय ग्राम एवं नगर में स्थापित होते थे जो प्राचीन सभा के रूप में थे।
    2. **चल न्यायालय**-यह न्यायालय समय-समय पर अलग अलग स्थानों पर कुछ समय के लिए स्थापित किए जाते थे।
    3. **मुद्रिता न्यायालय**-यह केन्द्रीय न्यायालय था जो विभिन्न नगरों में स्थापित किए जाते थे जिसमें उच्च न्यायाधीश नियुक्त किए जाते थे।
    4. **शास्त्रिता न्यायालय**-यह राजा का न्यायालय होता था। जो राज्य का सर्वोच्च न्यायालय होता था।

### नायंकार व्यवस्था

- इस काल में भूसामंतों एवं सेनानायकों के वेतन के बदले राजा द्वारा उन्हें एक विशेष भूखण्ड प्रदान किया जाता था जिसे अमरम् कहा जाता था।
- अमरम् भूमि का उपयोग करने के कारण इन नायकों को अमरनायक कहा जाता है। ये नायक/अमरनायक स्वतंत्र रूप से अमरम् का उपभोग नहीं करते थे। इसके लिए उन्हें दो दायित्वों का पालन करना पड़ता था—
    1. इस भूमि से प्राप्त आय का एक अंश राजा के खजाने में जमा करना था।
    2. इस भूमि में से प्राप्त आय में से राजा की सहायता के लिए एक सेना का निर्माण करना था।
- दायित्वों का निर्वहन न कर पाने पर उसको दी गयी भूमि वापस ले ली जाती थी। ये नायक आंतरिक मामले में काफी स्वतंत्र होते थे। इनके स्थानांतरण का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

Pariksha Manthan

'हरिविलासम्' नामक ग्रन्थ की रचना की। देवराय द्वितीय ने इन्हें 'कवि सार्वभौम' की उपाधि प्रदान की।

- कृष्णदेवराय के समय में तेलगू भाषा का सर्वाधिक विकास हुआ। इसके दरबार में तेलगू के आठ प्रसिद्ध विद्वान रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज के नाम से जाना जाता था। इनमें अल्लसानि पेद्दन प्रमुख थे।
- अल्लासानिपेद्दन को कृष्णदेवराय ने 'आंध्रकविता पितामह की उपाधि प्रदान की थी। पेद्दन ने 'स्वरोचित संभव मनुचरित' नामक ग्रंथ की रचना की।
- कृष्णदेवराय स्वयं तेलगू का प्रकाण्ड विद्वान था जिसने 'आमुक्त माल्यदा' नामक ग्रंथ की रचना की।

### विजयनगरकालीन धर्म

- विजयनगर के शासक हिन्दू धर्म के संरक्षक के रूप में जाने जाते हैं। इस काल के प्रारम्भिक शासक शैव धर्म के अनुयायी थे लेकिन आगे चलकर ये वैष्णव धर्म के अनुयायी हो गए। इस काल में वैष्णव एवं शैव दोनों धर्मों का अत्यधिक विकास हुआ।
- विजयनगर के शासक धर्मसहिष्णु शासक थे। इन्होंने अन्य धर्मों को प्रश्रय दिया।

### विजयनगरकालीन कला

- विजयनगर के शासकों में कला में अत्यधिक रुचि प्रदर्शित की। इस काल की कला ब्राह्मणवादी तत्व से प्रभावित है। व्यक्तिगत भवन के रूप में राजमहल/सभाभवन तथा सिंहासन मंच का निर्माण किया गया।
- इस काल के मंदिर विशाल प्रांगण में बनाए जाते थे। मुख्य मंदिर के बगल में अम्मन मंदिर का निर्माण किया जाता था। इसमें मुख्य मंदिर के देवता की पत्नी की मूर्ति स्थापित की जाती थी।
- इस काल के मंदिरों की एक जीवंत रचना कल्याण मण्डप है। ये स्तम्भों पर आधारित विशाल भवन होता था। इसके मध्य में एक यज्ञ/अग्निवेदी का निर्माण किया जाता था। इस भवन में मंदिर के देवता का प्रतीकात्मक रूप से विवाह उत्सव सम्पन्न होता था।

## बहमनी राज्य

- बहमनी राज्य की स्थापना मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में हसन गंगू नामक एक अमीर ने की थी।
- हसनगंगू अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह के नाम से बहमनी का सुल्तान बना।
- इसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाई। इसने स्वयं को एक अर्ध पौराणिक नायक इस्फांदियार के पुत्र बहमन का वंशज बताया। इसने जजिया कर समाप्त किया।

### महमूद गंवा

- यह बहमनी के सुल्तान मुहम्मदशाह तृतीय का वजीर था।
- इसने बहमनी राज्य का विस्तार पूर्वी समुद्र तट से लेकर पश्चिमी समुद्र तट तक किया।
- इसने बहमनी राज्य को चार प्रांतों की जगह 8 प्रान्तों में विभक्त किया।

# धार्मिक आंदोलन

## भक्ति आन्दोलन

- प्राचीन काल से ही हिन्दुओं को विश्वास था कि मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग हैं-कर्म, ज्ञान और भक्ति ।
- ईश्वर के प्रति अत्यधिक प्रेम और श्रद्धा की भावना को भक्ति कहते हैं। इसमें बताया गया है कि ईश्वर मनुष्य के हृदय में निवास करता है इसलिए इसे प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन इसकी प्राप्ति के लिए सभी मानसिक विकारों से मुक्त होना चाहिए।
- भक्ति में गुरु को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है लेकिन गुरु मोक्ष नहीं दिला सकता। मोक्ष के लिए ईश्वर की कृपा चाहिए

Pariksha Manthan

और ईश्वर कृपा के लिए प्रपत्ति मार्ग का अनुसरण किया जाय, इसका तात्पर्य है ईश्वर के प्रति समर्पण।

**भक्ति आंदोलन के कारण**

- मध्यकाल में भक्ति आंदोलन और उसकी लोकप्रियता का प्राथमिक कारण हिन्दू धर्म और समाज की अधोगति थी।
- इसके अतिरिक्त भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना और इस्लाम के आगमन की प्रेरणा का कार्य किया।
- इस्लाम धर्म की एकेश्वरवाद, भाईचारा, समानता जैसे विचारधारा निम्न वर्ग के हिन्दुओं को आकर्षित किया जिससे वह इस्लाम धर्म स्वीकार करने लगे। ऐसी स्थिति में हिन्दू धर्म एवं समाज में सुधार की आवश्यकता थी।

- भक्ति आंदोलन के संतों के उपदेशों को दो भागों में बांटा जा सकता है—
  1. **सकारात्मक उपदेश**-इसमें एक ईश्वर पर विश्वास और उसकी आराधना पर बल दिया। गुरु सेवा पर बल दिया गया। भाईचारे और समानता पर बल दिया।
  2. **नकारात्मक उपदेश**-इसमें मूर्तिपूजा, पुरोहित, यज्ञ और अन्य वाह्य आडम्बर का विरोध, छुआछूत का विरोध।

## भक्ति आंदोलनों के महत्वपूर्ण संत

### दक्षिण भारत के संत

### रामानुजाचार्य

- यह भक्ति आंदोलन के प्रथम संत थे जिनका जन्म 1017 ई. में आंध्र प्रदेश में हुआ और 1137 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी।
- प्रारम्भ में ये शंकराचार्य के मत के अनुयायी बने और यादव प्रकाश के शिष्य हुए। लेकिन इनसे संतुष्ट नहीं हुए।
- बाद में गोष्ठीपूर्ण के शिष्य बने और यही इनके वास्तविक गुरु बने। गोष्ठीपूर्ण ने इन्हें गुरुमंत्र दिया और इन्होंने वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया।
- इन्होंने श्री संप्रदाय की स्थापना की और भगवान विष्णु की भक्ति पर बल दिया।
- रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवाद दर्शन का प्रचार-प्रसार किया।
- रामानुजाचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखा है। (श्रीभाष्य नाम से)
- रामानुजाचार्य को दक्षिण में विष्णु का अवतार माना जाता है।

### निम्बार्काचार्य

- यह रामानुजाचार्य के समकालीन थे। इनका जन्म कर्नाटक के वेल्लारी में हुआ था।
- इन्होंने सनक सम्प्रदाय की स्थापना की और विष्णु की आराधना पर बल दिया।

### माध्वाचार्य

- ये 13वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण संत थे। इन्होंने विष्णु की आराधना पर बल दिया और ब्रह्म संप्रदाय की स्थापना की।

### उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलन का उद्भव दक्षिण भारत में हुआ और दक्षिण भारत से उत्तर भारत में भक्ति लाने का श्रेय रामानंद को जाता है।

### रामानंद

- रामानंद का जन्म प्रयाग में हुआ और इनका कर्म क्षेत्र काशी था।
- इन्होंने बैरागी संप्रदाय की स्थापना की और राम की आराधना पर बल दिया।
- इन्होंने पुरोहितवाद को चुनौती दी। इनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था, इन्होंने सभी धर्मों, सभी जाति 'स्त्री-पुरुष का भेदभाव किए बिना अपना शिष्य बनाया।

Parikshā Manthan

- रामानंद के अनुसार-जात-पात पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का कोई।
- रामानंद भक्ति आंदोलन के पहले संत थे जिन्होंने स्त्रियों के मोक्ष के द्वार खोले।

### कबीरदास

- कबीरदास रामानंद के सबसे प्रिय और प्रसिद्ध शिष्य थे। इन्होंने शेख तकी नामक सूफी संत से भी शिक्षा ग्रहण की।
- कबीर ने हिन्दू व मुस्लिम धर्मों के समाजों की कुरीतियों का विरोध किया और वेद, पुराण व कुरान की निन्दा की।
- ये समाज सुधारक भी थे इन्होंने बाल-विवाह एवं सती प्रथा का विरोध किया।
- कबीर की रचनाएं बीजक नामक ग्रंथ में संकलित है।

### संत रैदास

- संत रैदास परमसत्य (निर्गुण ब्रह्म) की उपासना पर बल दिया। इन्होंने अंतर्मन की पवित्रता पर बल दिया।
- रैदास के अनुसार- मन चंगा तो कठौती में गंगा।

### गुरुनानक

- इनका जन्म 1469ई. में पश्चिमी पंजाब के तलवंडी में खत्री परिवार में हुआ। यह गृहस्थ जीवन व्यतीत किए।
- ये दौलतखां के यहां नौकरी भी किए और कालीबेन नदी (पंजाब) के किनारे ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद इनके वाक्य थे- न कोई हिन्दू है न कोई मुसलमान, ईश्वर एक आदिसत्य है। कबीर की भांति इन्होंने सभी वाह्य आडम्बरों का विरोध किया।
- ये बाबर के समकालीन थे और बाबर के सैय्यद पुर के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था।
- गुरु नानक ने नानक पंथ की स्थापना किया जो आगे चलकर सिक्ख संप्रदाय में परिवर्तित हो गया।
- इनके उपदेश सिक्ख धर्म के पांचवे गुरु अर्जुनदेव के ग्रंथ 'आदिग्रंथ' में संकलित किए।

### बल्लभाचार्य

- ये तेलंगाना के ब्राह्मण थे जो बनारस आकर बस गए। यहीं वाराणसी में स्वप्न में भगवान श्री कृष्ण के आदेश पर वृंदावन चले गए।
- बल्लभाचार्य के भक्तिमार्ग को पुष्टिमार्ग कहा जाता है।
- ये भी गृहस्थ जीवन व्यतीत किए जो कभी संन्यास नहीं लिए और जीवन के अंतिम दिनों में 52 वर्ष की आयु में बनारस में जल समाधि ले ली।

### विट्ठलनाथ

- ये बल्लभाचार्य के पुत्र थे जो अकबर के समकालीन थे। अकबर ने इन्हें जैतपुर और गोकुल की जागीर प्रदान की।
- इन्होंने कृष्णभक्ति के आठ संतों को मिलाकर अष्टछाप के कवि की स्थापना की।
- विट्ठलनाथ के प्रसिद्ध शिष्य रसखान थे।

### सूरदास

- ये बल्लभाचार्य के शिष्य थे। इनकी भक्ति को पुष्टिमार्ग का जहाज कहा जाता है जो सखा भाव की भक्ति है।
- सूरदास ने 'सूरसागर' नामक ग्रंथ की रचना की।

### चैतन्य

- ये पश्चिम बंगाल के ब्राह्मण थे।
- इनकी प्रार्थना विधि को संकीर्तन कहा जाता है। ये विष्णु के आंशिक अवतार माने जाते हैं।

### मीराबाई

- मीराबाई भक्ति आंदोलनों की महिला संतों में सबसे प्रसिद्ध संत थीं।
- यह मेड़ता के राजा राणा रतन सिंह की पुत्री थी। इनका विवाह मेवाड़ के शासक राणा सांगा के पुत्र भोज के साथ हुआ जल्दी ही भोज की मृत्यु हो जाने से यह विधवा हो गयी।

Parikshā Manthan

## सूफी आन्दोलन/सूफीवाद

- सूफीवाद का शुद्ध शब्द 'तसव्वुफ' अर्थात् 'परमसत्य' का ज्ञान प्राप्त करना है।
- सूफी शब्द की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द 'सूफ' से हुई है जिसका अर्थ है- 'ऊन'। अर्थात् वे मुस्लिम संत जो सांसारिकता से अलग होकर निर्धनता का जीवन व्यतीत करते थे और ऊनी कपड़ा पहनते थे वही सूफी कहलाए।
- सूफीवाद का उदय इस्लाम के उदय के साथ माना जाता है।
- प्रारम्भिक सूफी संत इस्लामी कानूनों को अनिवार्य मानते थे बाद में यह दो भाग में बँट गए-

1. **बा-शरा**-वे सूफी जो इस्लामी रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं का पालन करना अनिवार्य समझते थे। वे बा-शरा कहलाए।
2. **बे-शरा**-वे सूफी संत जो इस्लामी परम्पराओं या कानूनों को पालन करना अनिवार्य नहीं समझते थे।

- सूफीवाद में प्रेम को महवपूर्ण स्थान दिया गया और यह प्रेम ईश्वरीय प्रेम है जिसको 'इश्क-ए-हकीकी' कहा जाता है।

## भारत में सूफीवाद

- भारत में प्रारम्भिक सूफीवाद का इतिहास अस्पष्ट है लेकिन भारत में सूफीवाद का वास्तविक संस्थापक/प्रचारक अबुल हसन हुजिब्री को माना जाता है जिन्हें हजरत दातागंज भी कहा जाता है। ये महमूद गजनवी के समकालीन थे जो गजनवी के समय पंजाब आए।
- अबुल फजल ने 14 सिलसिलों की चर्चा किए लेकिन भारत में चार सिलसिले ही लोकप्रिय हुए-

### 1. चिश्ती सिलसिला

- चिश्ती सिलसिला का संस्थापक ख्वाजा अबूइश्हाकसामी चिश्ती थे। भारत में इस शिलशिला के संस्थापक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती थे।
- तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात् ये भारत आए और अजमेर में जाकर अपनी खानकाह स्थापित किया और ये हिन्दू समुदायों के बीच काफी लोकप्रिय हुए।
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य शेख कुतुबुद्दीन बक्तियार काकी ने अपने जीवन काल में दिल्लो में एक खानकाह स्थापित किया। इनका संगीत से अत्यधिक लगाव था और संगीत सुनते-सुनते ही इनकी मृत्यु हो गयी और दिल्ली में इन्हें दफना दिया गया।
- शेख बक्तियार काकी के सबसे अच्छे शिष्य बाबा फरीद थे इन्होंने अपनी खानकाह अजोधन (पंजाब) में स्थापित किया। बाबा फरीद हिन्दुओं के काफी करीब थे और सिक्खों को आदि ग्रंथ में इनका उल्लेख किया गया। इनकी दरगाह पाकपाटन में बनाई गई। बाबा फरीद बलबन की पुत्री हुजैरा से विवाह किया था।
- बाबा फरीद के सबसे योग्य शिष्य हजरत निजामुद्दीन औलिया थे जो बचपन से ही सूफी संत हो गए।
- औलिया दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा लेकिन किसी सुल्तान का संरक्षण नहीं प्राप्त किया।
- इन्होंने चिश्ती सिलसिले को अखिल भारतीय स्तर पर प्रचार किया इसलिए इन्हें महबूब-ए-इलाही' या 'सुल्तान-उल-औलिया' कहा जाता है। ये योग-साधना में अत्यन्त विश्वास करते थे।
- शेख शलीम चिश्ती अकबर के समकालीन थे जिसने सीकरी में अपनी खानकाह स्थापित किए और ये इस सिलसिले के अंतिम सूफी संत थे। इन्हीं के आशीर्वाद से अकबर को सलीम जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ।

### 2. सुहरावर्दी सिलसिला

- इस सिलसिला के संस्थापक शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी थे भारत में इसके संस्थापक शेख बहाउद्दीन जकारिया थे।

Pariksha Manthan

- बहाउद्दीन जकारिया भारत आने के बाद मुल्तान में अपनी खानकाह स्थापित की। इन्होंने समकालीन राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। ये इल्तुतमिश के राजकीय संरक्षण को प्राप्त किया।
- बहाउद्दीन जकारिया के बाद इनके पुत्र शेख सदरुद्दीन इस सिलसिले के प्रमुख संत हुए। इन्होंने उत्तराधिकार में प्राप्त सारी सम्पत्ति को दान कर दिया। इन्होंने बलबन के पुत्र मुहम्मद की पत्नी से विवाह किया था।
- शेख सदरुद्दीन के बाद इनके पुत्र शेख रुक्नुद्दीन अब्बुलफत सबसे बड़े सूफी संत हुए। इनके समय सुहरावर्दी सिलसिले का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार हुआ। इनका सुल्तानों एवं अमीरों से घनिष्ठ सम्बंध था। इन्होंने कहा कि लालच, क्रोध, अहंकार को छोड़ देना चाहिए क्योंकि ये लोगों को जानवर बना देते हैं।
- ये सिलसिला चिश्ती सिलसिले की भांति अखिल भारतीय सिलसिला नहीं बन सका। इसके लिए इसकी नीतियां जिम्मेदार थीं।
- इस सिलसिले के संतों ने शासक वर्ग एवं कुलीन वर्गों से संबंध बनाए और उन्हीं लोगों को अपने खानकाह में आने की अनुमति दी।

### 3. कादिरी सिलसिला

- इस सिलसिला का संस्थापक शेख अब्दुल कादिर जिलानी थे और भारत में इसके संस्थापक शेख मुहम्मद जिलानी थे।
- शेख मुहम्मद जिलानी 1481 ई. में भारत आए और उच्छ में अपनी खानकाह स्थापित किए।
- इस सिलसिले के संत शासकीय सेवा को अच्छा मानते थे और संगीत को प्रश्रय नहीं दिया।
- इस सिलसिले के संत हरे रंग की पगड़ी बांधते थे और गुलाब का फूल लगाते थे जो शांति का प्रतीक था।
- इस सिलसिले का सबसे बड़ा केन्द्र पंजाब के मुल्तान में था।

### 4. नक्शबंदी सिलसिला

- इस सिलसिले का संस्थापक शेख बहाउद्दीन नक्शबंदी थे और भारत में इसके संस्थापक ख्वाजा बाकी बिल्लाह थे।
- ख्वाजा बाकी बिल्लाह 1597 ई. में अकबर के समय काबुल से दिल्ली आए और यहीं अपनी खानकाह स्थापित किए। ये सूफियों में काफी कट्टर थे जो अकबर की उदार नीतियों का प्रतिकार करने दिल्ली आए।
- ख्वाजा बाकी बिल्लाह के बाद शेख फारुख अहमद सरहिन्दी इस सिलसिले के संत हुए। ये भी बहुत कट्टर संत थे। इन्होंने भारत में इस्लाम धर्म का भरपूर प्रचार-प्रसार किया इसीलिए इन्हें मुजादिया/मुजादिद (पुनर्जागरण करने वाला) की उपाधि दी गई। इन्होंने अपने आप को कयूम घोषित किया।
- इन्होंने कयूम का अर्थ जो इंसान-उल-कामिल से ऊपर बताया। अल्लाह ने कयूम का पद मुझे दिया है मेरे बाद मेरे तीन उत्तराधिकारी को ये पद और देगा।
- दूसरे कयूम-शेख मुहम्मद मासूम थे। औरंगजेब इन्हीं का शिष्य था और इन्हीं के प्रभाव में आकर कट्टरवादी शासक बना।
- भारत में सर्वाधिक कट्टर सिलसिला नक्सबंदी सिलसिला था। इस सिलसिले में शरियत के पालन पर पूर्णतः बल दिया जाता था। इस सिलसिले में शिया और हिन्दू के समान विरोधी थे।
- ये धर्म परिवर्तन में शक्ति के प्रयोग को अच्छा मानते थे और संगीत विरोधी भी थे। ये सरकारी सेवा को अच्छा मानते थे।

Parikshā Manthan

| सूफियों के प्रमुख सिलसिले एवं उनके संस्थापक | | |
|---|---|---|
| **सिलसिला** | **संस्थापक** | **भारत में इसके संस्थापक** |
| 1. चिश्ती सिलसिला | ख्वाजा अबूइश्हाक सामी चिश्ती | ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती |
| 2. सुहरावर्दी सिलसिला | शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी | बहाउद्दीन जकारिया। |
| 3. कादिरी सिलसिला | शेख अब्दुल कादिर जिलानी | शेख मुहम्मद जिलानी |
| 4. नक्शबंदी सिलसिला | शेख बहाउद्दीन नक्शबंदी | ख्वाजा बाकी बिल्लाह |

| प्रमुख सिलसिला और उनके संत | | | |
|---|---|---|---|
| **चिश्ती सिलसिला** | **सुहरावर्दी सिलसिला** | **कादिरी सिलसिला** | **नक्शीबंदी सिलसिला** |
| 1. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती | 1. शेख बहाउद्दीन जकारिया | 1. शेख मुहम्मद जिलानी | 1. ख्वाजा बाकी बिल्लाह |
| 2. शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी | 2. शेख सदरुद्दीन | 2. शेख मीर मुहम्मद उर्फ (मियां मीर) | 2. शेख फारुख अहमद सरहिन्दी |
| 3. शेख हमीदुद्दीन नागौरी | 3. शेख रुकनुद्दीन अबुल फत | 3. शेख मुल्लाशाही बदख्शी | 3. शेख मुहम्मद मासूम |
| 4. बाबा फरीद | | | 4. शेख हुजतुल्ला |
| 5. शेख निजामुद्दीन औलिया | | | 5. शेख अब्दुलअली जुबैर |
| 6. शेख नासिरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी | | | 6. शाहवली उल्ला |
| 7. शेख सलीम चिश्ती | | | 7. ख्वाजा मीर दर्द |

## मुगल वंश – ( 1526 ई.-1857 ई. )

### जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर

- मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर था। इसका जन्म फरगना में 1483 ई. में हुआ था।
- बाबर पितृवंश की ओर से तैमूर वंश का 5वां एवं मातृवंश की ओर से चंगेज खां का चौदहवां वंशज था।
- 1494 में उमर शेख मिर्जा की मृत्यु के बाद यह फरगना का शासक बना। फरगना की राजधानी अन्दीजान थी।
- 1507 में इसने बादशाह की उपाधि धारण की।

### बाबर का भारतीय अभियान

- मध्य एशिया की राजनीति की असफलता ने बाबर को भारत में आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया।
- बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध के पहले भारत पर चार अभियान किया।
- प्रथम अभियान 1519 में हुआ जब इसने सीमा के दो स्थल बाजौर और भेरा को जीत लिया। बाजौर के युद्ध में बाबर ने सर्वप्रथम तोपों का प्रयोग किया।

- मीराबाई के गुरु रैदास थे। जीवन के अंतिम वर्षों में यह द्वारिका आ गयीं और यहीं इनकी मृत्यु हो गयी।

तुलसीदास

- तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रमुख संत थे। इनका जन्म राजापुर (बाँदा) में हुआ था, इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था।
- इन्होंने राम को विष्णु के औतार के रूप में चित्रण किया और सीता सहित राम की उपासना पर बल दिया। इन्होंने बताया कि भक्ति में निर्गुण ब्रह्म भी सगुण हो जाती है।
- इनकी महान रचना 'रामचरितमानस' है जो अवधी भाषा में रचित है और अनेक भाषाओं में इनका अनुवाद मिलता है।

**महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन**

14वीं-17वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का प्रसार-प्रचार हुआ। महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक ज्ञानेश्वर थे।

**ज्ञानेश्वर-**

- इन्होंने वाह्य आडम्बरों का विरोध किया। इन्हें विष्णु का ग्यारहवां अवतार माना जाता है। ये वरकरी संप्रदाय से भी संबंधित थे।

**संत नामदेव-**

- ये महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे। इनके उपदेश सिक्खों के आदिग्रंथ में संकलित हुए। ये भी वरकरी सम्प्रदाय से संबंधित थे।

**एकनाथ-**

- ये कृष्ण के परमभक्त थे। इन्होंने भागवत पुराण के 11वें स्कन्ध को 'नाथ भागवत' नाम से संकलित किया जिसे मराठी भाषा में लिखा ।

**तुकाराम-**

- ये महाराष्ट्र के कबीर कहे जाते हैं। इनके संकलन को अभंग कहा जाता है।

**रामदास-**

- ये शिवाजी के अध्यात्मिक गुरु थे।
- ये धरकारी संप्रदाय से संबंधित थे।

**निर्गुण संत**

1. कबीर दास 2. गुरु नानक 3. रैदास

**कृष्ण भक्ति शाखा के संत**

1. बल्लभाचार्य 2. विट्ठलनाथ 3. सूरदास 4. चैतन्य महाप्रभु 5. मीराबाई 6. रसखान

**रामभक्ति शाखा के संत**

1. तुलसीदास 2. अग्रदास 3. नाभादास

**सिक्ख धर्म गुरु**

1. गुरुनानक- सिक्ख धर्म के संस्थापक।
2. गुरु अंगद- गुरुमुखी लिपि के प्रवर्तक।
3. गुरु अमरदास- अनुशासन पर बल दिया।
4. गुरु रामदास- मुगल सम्राट अकबर द्वारा प्राप्त भूमि पर अमृतसर नामक नगर बसाया।
5. गुरु अर्जुनदेव- आदि ग्रंथ का संकलन किया ।
   अमृतसर में स्वर्णमंदिर का निर्माण।
   जहांगीर द्वारा इन्हें मृत्युदंड दिया गया।
6. गुरु हरगोविन्द- अकाल तख्त की स्थापना की। सिक्खों को लड़ाकू बनाया।
7. गुरु हरराय- अपने पुत्र रामराय की औरंगजेब के दरबार में भेजा।
8. गुरु हरकिशन- चेचक के कारण जल्दी ही मृत्यु हो गई।
9. गुरु तेगबहादुर- इस्लाम धर्म न स्वीकार करने के कारण औरंगजेब ने मृत्युदंड दिया।
10. गुरु गोविन्द सिंह- खालसा पंथ की स्थापना की
    - औरंगजेब के जीवनपर्यंत संघर्ष किया।
    - नांदेर में इनकी हत्या कर दी गई।
    - इन्होंने गुरु पद समाप्त किया।

- दूसरा अभियान भी 1519 में हुआ जब इसने पेशावर को जीता।
- तृतीय अभियान 1520 में हुआ, इस बार इसने स्यालकोट एवं सैयदपुर को जीता।
- चौथा अभियान 1524 में हुआ जब इसने लाहौर और दीपालपुर को जीतकर पंजाब में प्रवेश किया।

### पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल 1526)

- 1525 में पंजाब पर अधिकार करने के बाद बाबर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया, इसकी सूचना पाकर इब्राहिम लोदी भी पानीपत की ओर प्रस्थान किया।
- 21 अप्रैल को पानीपत के मैदान में युद्ध हुआ, इसमें इब्राहिम लोदी पराजित हुआ और मारा गया।
- इस युद्ध के बाद लोदी वंश का अंत हुआ और मुगल वंश की स्थापना हुई।
- इस युद्ध में पहली बार बाबर ने तुलगमा युद्ध नीति के साथ तोपों का प्रयोग किया।
- इसके बाद बाबर ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया।

### खानवा का युद्ध (1527)

- 1527 में यह युद्ध मेवाड़ के शासक राणा सांगा और बाबर के बीच लड़ा गया। इस युद्ध का कारण बाबर का भारत में रहने का निश्चय था।
- खानवा के युद्ध में इब्राहिम लोदी का चचेरा भाई महमूद लोदी राणा सांगा की तरफ से युद्ध किया।
- बाबर ने अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए जिहाद (धर्मयुद्ध) का नारा दिया।
- इस युद्ध में बाबर विजयी हुआ और गाजी की उपाधि धारण की।

### चन्देरी का युद्ध (1528)

- यह युद्ध चन्देरी के शासक मेदिनीराय तथा बाबर के बीच लड़ा गया।
- इस युद्ध में मेदिनीराय पराजित हुआ और चन्देरी पर बाबर का अधिकार हो गया।
- इस युद्ध में शेरशाह बाबार की तरफ से भाग लिया था।

### घाघरा का युद्ध (1529)

- यह युद्ध बाबर और इब्राहिम लोदी के चचेरे भाई महमूद लोदी के बीच लड़ा गया।
- महमूद लोदी इस युद्ध में पराजित हुआ और भाग गया।
- मध्यकालीन भारत का यह पहला युद्ध था जो जल और स्थल दोनों में लड़ा गया।
- भारत में बाबर की सफलता का मुख्य कारण उसका तोपखाना था।
- बाबर भारत का पहला मुस्लिम शासक था जिसने बादशाह की उपाधि धारण की।
- बाबर ने गज-ए-बाबरी नामक एक माप की इकाई का प्रचलन किया।
- बाबर ने तुर्की भाषा में तुज्क-ए-बाबरी (बाबरनामा) नाम से अपनी आत्मकथा लिखी।
- 1530 में बीमारी के कारण आगरा में बाबर की मृत्यु हो गई तथा इसे काबुल में दफनाया गया।

**बाबर द्वारा भारत में लड़े गये प्रमुख युद्ध**

| युद्ध | वर्ष | किसे पराजित किया |
|---|---|---|
| 1. पानीपत का प्रथम युद्ध | 1526 ई. | इब्राहिम लोदी को |
| 2. खानवा का युद्ध | 1527 ई. | राणा सांगा को |
| 3. चन्देरी का युद्ध | 1528 ई. | मेदिनीराय को |
| 4. घाघरा का युद्ध | 1529 ई. | महमूद लोदी को |

Pariksha Manthan